परिचय

वनाओं की वारि-धारा में कल्पना की जो तरङ्गें उठा करती हैं, उनका अस्तित्व यद्यपि क्षणिक ही रहता है, तथापि उनकी स्मृति चिरस्मरणीय बन जाती है। ऐसी कल्पना, जिसने एक बार अपना अस्तित्व ऊपर उठा कर सदैव के लिए उसे पतन के गर्त में गिरा दिया, किसी साम्राज्य से कम नहीं, जिसने एक बार मनुष्यों के हृदयों पर शासन कर सदैव के लिए अपने को धूल में मिला दिया। इस कल्पना का अस्तित्व एकान्त सत्य से अधिक महत्वपूर्ण है। सत्य सदैव एक-सा रूप धारण कर विश्व में मरुस्थल की भाँति पड़ा रहता है, कल्पना निर्भर का रूप रख कर नित्य नई लहरों में भूल कर अठखेलियाँ करती हुई प्रवाहित होती रहती है।

चित्तौड़ की जलती हुई व्यथा के प्रदर्शित करने में मैंने इसी कल्पना का सहारा लिया है। चित्तौड़ की कथा

इतिहास के पृष्ठों पर अङ्गारे की भाँति रक्खी है, उसके विश्व-व्यापी सत्य में कल्पना का अस्तित्व व्यर्थ-सा है। किन्तु एक बात है, जिस प्रकार चन्द्र का सौन्दर्य बादलों में घिरे रहने पर और भी अधिक बढ़ जाता है, उसी प्रकार कल्पना के बीच में सत्य का सौन्दर्य और भी मर्मस्पर्शी तथा हृदय-द्रावक हो जाता है। इसलिए सत्य के रूप को विकृत करने के लिए नहीं, वरन् सत्य को सजाने के लिए मैंने कल्पना को सेवक की भाँति बुला लिया है।

आज मैं चित्तौड़ की कहानी लिखने बैठा हूँ। उसी चित्तौड़ की, जो हमारी भारतीय ललनाओं के रक्त से लाल है। वहीं सुकुमार ललनाओं ने अपने कोमल हाथों से अपने ही लिए चिता सजाई थी। कहाँ वह प्रचण्ड आग और कहाँ उनका कोमल शरीर—विचित्र संयोग था! किन्तु यह अमर सत्य है कि इस बलिदान का रक्त भारतीय सभ्यता को उन प्रचण्ड शब्दों में घोषित करता रहेगा, जिसके बल पर वह विश्व-सभ्यता को पैरों-तले कुचल देगा। विश्व-संस्कृति में वह आत्म-बलिदान कुछ कम महत्व नहीं रखता। उस बलिदान में क्रान्ति और गौरव की वे चिनगारियाँ भरी हैं, जो

स्वार्थी संसार के कोने-कोने में आग लगा सकती हैं। चित्तौड प्रदेश ने भारत को वह गौरव दिया, जो अभी तक किसी देश को अपने प्रदेश से नहीं मिला। चित्तौड़ की चिता की ज्वालाएँ अब भी जब इतिहास के पृष्ठों पर चमकती हैं, तो भाव मूक हो जाते हैं, लेखनी काँप उठती है, और आँखों से आँसुओं में भीगी हुई चिन-गारियाँ निकलने लगती हैं। कैसा समय था! मुग़लों और पठानों का भीषण अत्याचार, उनकी पाप-लीला और वीभत्स-वासना का कौतुक—यह सभी हिन्दू-जाति के वक्षस्थल पर ताण्डव नृत्य कर रहे थे।

"तू क्यों ख़ूबसूरत है?"

"तू क्यों हिन्दू है?"

"शेख़ी और मस्ती से भरी हुई तेरी आँख क्यों छलकते हुए पैमाने से मिलती-जुलती है?"

"तू क्यों गुलबदन है?"

उस समय के वासना में डूबे हुए मुसलमानों की आँखों में अक्षम्य अपराध गिने जाते थे। जहाँ किसी हिन्दू के घर में सौन्दर्य का फूल खिला कि उसका घर वीरान हो गया, और वह फूल गिरा यवनों की वासना की भीषण अग्नि में। हिन्दुओं पर भीषण से भीषण

अत्याचार किए गए, इसलिए कि वे एकान्त हिन्दू थे।' यह था यवनों का निर्दयता-पूर्ण शासन और उनकी वासना मयी प्रवृत्ति !

उस समय भी भस्म की महान् राशि में एक चिनगारी छिपी हुई थी और वह चिनगारी थी चित्तौड़-भूमि की गौरव और सम्मान-भावना। सारे हिन्दू-राजा आँख मूँद कर छल पूर्ण नीति में आकर अपमान-रूपी विष-व्यञ्जन खा रहे थे, उस समय भी चित्तौड़ ने सम्मान-युक्त सूखी रोटी ही में अपने जीवन की भावना को जाग्रत रक्खा। उसने संसार के सामने यह आदर्श रखना चाहा कि क्रूर से क्रूर शक्तियों के आगे जीवन के गौरव की विजय हो सकती है, और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। पठानों और मुग़लों ने अपनी सैन्य-शक्ति से चित्तौड़ को कुचलना चाहा। चित्तौड़ के क़िले को तो उन्होंने तोड़ दिया, पर वे चित्तौड़ की आत्मा को छू भी न सके। यह था स्वाधीनता का उत्कृष्ट आदर्श......!

मेरी पुस्तक का कथानक उस समय से प्रारम्भ होता है, जब मुग़लों का प्रथम अधिष्ठाता बाबर राज्य करता था। उसने भारत को केवल लूटने ही का क्षेत्र नहीं

जाना, वरन् शासन करने का महान् केन्द्र समझा। इसी-लिए न जाने उसने कितने परिश्रम से भारत में अपने राज्य की जड़ जमाई। उसके साथी घर जाने के लिए तड़प रहे थे, काबुल की ठण्डी हवा खाना चाहते थे, किन्तु बाबर ने बड़े गम्भीर शब्दों में उन्हें प्रोत्साहित किया और भारत में रहने का ही अनुरोध किया; जब कि उनके चरणों के समीप भारत की सारी विभूति बिखरी हुई पड़ी थी।

इसी मुग़ल बाबर ने राणा संग्रामसिंह के साथ युद्ध किया उस संग्राम का वर्णन लेनपूल इस प्रकार करता है :—

The great Rana of Chitor, the revered head of all the Rajput Princes, commanded a vast army One hundred and twenty chieftains of rank with 80,000 horses and 500 War elephants followed him to the field. The lords of Marwar and Amber, Gwalior, Ajmere, Chanderi and many more brought their retainers to this standards.

अर्थात्—"राजपूत-राजाओं के सुसम्मानित अधिपति

चित्तौड़ के महाराणा ने एक बहुत बड़ी सेना का सञ्चालन किया। ८० हज़ार घोड़ों और ५०० रण-गजों के सहित १२० सरदारों ने समर-भूमि में पदार्पण किया। मारवाड़ और अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, चन्देरी के महाराणाओं तथा अन्य राणाओं ने भी अपनी-अपनी सेनाएँ उसकी (संग्रामसिंह की) रण-ध्वजा के समीप खड़ी कीं।" महाराणा ने हाथी पर चढ़ कर सैन्य-सञ्चालन किया। फल यह हुआ कि शत्रु ने उन पर ठीक निशाना लगा कर घायल कर दिया और फलतः राजपूतों को पराजित होना पड़ा।

लेनपूल ने लिखा है कि युद्ध के पश्चात् महाराणा की मृत्यु शीघ्र ही हो गई :—

"Rana escaped severely wounded and died soon after. . . ."

अर्थात—"राणा बुरी तरह घायल होकर रण-भूमि से बाहर निकल गया और कुछ ही समय पश्चात् मर गया।"

"महाराणा यश-प्रकाश" से ज्ञात होता है कि युद्ध के बाद जब महाराणा जयपुर-राज्य में थे (क्योंकि उन्होंने प्रतिज्ञा की थी "जब तक बाबर को युद्ध में

पराजित न करूँगा, मैं चित्तौड़ नहीं लौटूँगा) उस समय 'जमणा' नाम का चारण महाराणा के सम्मुख गया और उन्हें वीर-रस का एक पद्य सुनाया। पद्य सुन कर महाराणा की निराशा दूर हो गई और उन्होंने बाबर के विरुद्ध फिर कमर कसी। किन्तु जब वे युद्ध के लिए जा रहे थे, मार्ग ही में उनका शरीर अस्वस्थ हुआ और अन्त में जनवरी सन् १५२८ में उनका स्वर्गवास हो गया।

दोनों कथनों से ज्ञात होता है कि महाराणा युद्ध के बाद अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहे। लेनपूल का कथन तो मृत्यु का समय युद्ध के कुछ समय बाद ही सिद्ध करता है। मैंने अपने कथानक में रोचकता और भाव-तीव्रता लाने के लिए ही लेनपूल का मत ग्रहण कर महाराणा की मृत्यु का समय युद्ध के पश्चात् ही लिख दिया है।

महाराणा का व्यक्तित्व इतिहास में इस प्रकार वर्णित है—"उनका रङ्ग गेहुँआ था, हाथ लम्बे और आँखें बड़ी थीं। किन्तु उनकी शारीरिक सुन्दरता उनके शौर्य के कारण बिगड़ गई थी।

"अपने भाई पृथ्वीराज के साथ के झगड़े में उनकी एक आँख फूट गई थी, इब्राहीम लोदी के साथ के दिल्ली

के युद्ध में उनका एक हाथ कट गया और एक पैर से वे लँगड़े हो गए थे। इसके अतिरिक्त उनके शरीर पर अस्सी घाव भी लगे थे और शायद ही उनके शरीर का कोई अंश ऐसा हो, जिस पर युद्धों में लगे घावों के चिन्ह न हों?"

(उदयपुर-राज्य का इतिहास)

यदि उपर्युक्त वर्णन पर ध्यान रख कर मैं महारानी करुणा और संग्रामसिंह का मिलन अङ्कित करता तो द्वितीय सर्ग का सारा सौन्दर्य मेरी लेखनी को गाली दे देता। उसका सारा मज़ा किरकिरा हो जाता, सौन्दर्य की सारी मादकता क़ाफ़ूर हो जाती। सौन्दर्य की रक्षा इसी में है कि महाराणी करुणा और संग्राम का मिलन राणा के कुरूप होने के पहले ही हो गया है। यही सोच कर मैंने यह मिलाप वर्णन किया है अन्यथा निम्न पंक्तियों में क्या रस रह जावेगा!

...किन्तु पीछे से कर-पल्लव—
उठे—(जिन पर प्रस्वेद की बूँद)
लिए करुणा के युग दृग मूँद
यही था अभिनय क्या अभिनय!

... ...

मिले कर दृग से सहित दुकूल
कपोलाधर का हुआ मिलन
खिले तब दोनो वदन-सुमन
हुए लज्जित उपवन के फूल !

... ...

लोचनों का था मिलन-समय
हुए दोनों के कर सन्नद्ध
हो गए बाहु-पाश में बद्ध
प्रेम-लीला का था अभिनय !!

इसी धारणा के अनुसार पुस्तक के द्वितीय और तृतीय सर्ग में बहुत समय व्यतीत हो जाता है। क्योंकि द्वितीय सर्ग उस समय का चित्र है, जब महाराणा में शारीरिक सुन्दरता यथेष्ट थी, और तृतीय सर्ग उस समय का चित्र है जब महाराणा बाबर से युद्ध की तैयारी कर रहे थे और उनके शरीर पर घावों के चिह्न थे, एक पैर टूट गया था, आदि।

महाराणा ने कुल २८ विवाह किए थे, पर करुणा उनकी सबसे प्यारी रानी थी। महाराणा के ७ पुत्र हुए। 'मुहणोत नैणसी' ने लिखा है कि महाराणा के करमेती (कर्मवती या करुणा) से दो पुत्र हुए—विक्रमादित्य

और उदयसिंह। मैंने जान कर भी विक्रम का निर्देश इसलिए नहीं किया है कि उससे कथानक के सौन्दर्य में बाधा पड़ती थी। किसी-किसी इतिहासज्ञ के अनुसार उदयसिंह का जन्म राणा की मृत्यु के बाद हुआ है। कुछ इतिहासज्ञों को यद्यपि यह कथन स्वीकार नहीं है, तो भी काव्य-साम्राज्य में शोक के बाद हर्ष का प्रस्फुटन सौन्दर्य के साँचे में ढला होता है। यही समझ कर, कुछ अन्य इतिहासज्ञों की बात मान कर मैंने उदयसिंह का जन्म युद्ध के बाद ही वर्णित किया है।

एक बात और है। तबाकत-इ-अकबरी में लिखा है कि हुमायूँ ने करुणा की रक्षा तो नहीं की, वरन् एक ओर खड़े होकर बहादुरशाह की चित्तौड़-चढ़ाई का मज़ा देखा। यद्यपि वह बहादुरशाह से लड़ना चाहता था, तथापि वह यह भी चाहता था कि चित्तौड के युद्ध के फल के पश्चात् कोई निश्चित कार्य किया जावे। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ फ़िरिश्ता ने लिखा है कि जब हुमायूँ भी बहादुरशाह से लड़ने के लिए चित्तौड को रवाना हुआ और जब ग्वालियर पहुँचा, तो उसको बहादुरशाह का एक पत्र मिला। उसमें लिखा था कि—'मैं हिन्दुओं (विधर्मियों) के विरुद्ध जिहाद (धर्मयुद्ध) में संलग्न

हूँ। एक मुसलमान की हैसियत से तुम्हें इस समय मेरे धर्मयुद्ध में बाधा देना उचित नहीं।" यह पढ़ कर हुमायूँ ग्वालियर ही में रुक गया और चित्तौड़ के युद्ध की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगा। फिर 'जौहर' के पश्चात् हुमायूँ ने बहादुरशाह से युद्ध किया।

मेरे वर्णन का ढङ्ग इससे कुछ भिन्न है। महारानी करुणा को ज्ञात नहीं था कि बहादुरशाह ने हुमायूँ को किस प्रकार का पत्र भेजा है, अतएव वे अन्त तक हुमायूँ की प्रतीक्षा ही करती रहीं। इस प्रतीक्षा के अनिश्चित् भावों ने मेरी कविता को मनोवेगों के चित्रण करने का पर्याप्त सामान दे दिया है। आशा है, इस कल्पना-शृङ्गार से विज्ञ इतिहासज्ञ रुष्ट न होंगे।

अब मेरी कविता की ओर आइए। मैंने अपनी पुस्तक में छन्द को वीर और करुणा के भावों के उपयुक्त ही चुना है। वीर और करुणा रस के भाव बड़े उन्मत्त होते हैं। उनमें दर्प और रोदन की बड़ी वेगवती शक्तियाँ छिपी हुई हैं। वे जब प्रकट होती हैं तो बड़े वेग और बड़ी शीघ्रता के साथ, पर उनका वेग उन्हें अधिक देर तक निकलने नहीं देता। शब्द निकलते हैं बड़े वेग के साथ, पर वे शब्द होते हैं बहुत ही थोड़े। प्रायः देखा जाता

है कि कोई व्यक्ति क्रोध अथवा शोक में कुछ शब्द ही बोलता है, पर बोलता है बड़े वेग के साथ। इसी कारण मैंने करुणा और वीर भावों के प्रदर्शन के लिए छोटी-छोटी पंक्तियों वाला छन्द ही चुना है। उस थोड़ी सी जगह में वीर और करुणा के भाव रुक-रुक कर बड़े वेग से निकलते हैं। यह षष्ट सर्ग में करुणा के विलाप और दशम् सर्ग में हुमायूँ की आवेगपूर्ण वक्तृता से भली-भाँति जाना जा सकता है।

छन्द का तुकान्त भी एक अलग ढङ्ग का है। प्रथम और चतुर्थ तथा द्वितीय और तृतीय पंक्तियों में तुक-साम्यता है। ऐसा करने में मेरा एक अभिप्राय है। वह यह कि भाव की गति प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के तुकान्त से न रुक कर तीसरे चरण तक जाती है और फिर वहाँ चतुर्थ चरण में समाप्त होकर प्रथम चरण का स्मरण दिलाती है। ऐसा करने से भाव में एक प्रकार की तीव्रता, ध्वनि और शक्ति आ जाती है। उदाहरणार्थ—

लालिमा भरे लजीले गाल
उठ गए छोड़ मृदुल अञ्चल
हुए स्थिर दृग, जो थे चञ्चल
दिख पड़े बिखरे-बिखरे बाल !

सङ्गीत के जानने वाले कानों को ज्ञात हो जायगा कि सङ्गीत की लहर जो प्रथम पंक्ति से उठती है, वह हिलोरें लेती हुई तृतीय पंक्ति तक चली जाती है, और द्वितीय पंक्ति से मिल कर एक ऐसा राग उत्पन्न करती है जिससे भाव-तीव्रता बहुत बढ़ जाती है। चतुर्थ पंक्ति धीरे-धीरे वायु में मिल कर प्रथम पंक्ति को सार्थक कर देती है। अब उसी छन्द को दूसरे रूप में रखिए :—

लालिमा भरे लजीले गाल
उठ गए छोड़ मृदुल अञ्चल
दिख पड़े बिखरे-बिखरे बाल,
हुए स्थिर दृग जो थे चञ्चल

इसी प्रकार पंक्तियों को उलट-पलट कर यह छन्द कई रूपों में रक्खा जा सकता है, पर उनमें वह माधुर्य नहीं रह जाता जो वास्तविक रूप में रक्खे हुए छन्द में है।

अन्त में अपनी बाल्यकाल की रचना आपके सामने रखते समय मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

मई, १९२७
लक्ष्मी-भवन, नरसिंहपुर

—कुमार

सर्ग-सूची

चित्तौड़ की चिता

सती होने के पूर्व की प्रार्थना

चित्तौड़ की चिता

प्रस्तावना

अरे, भारत-भू के इतिहास !
अचल विद्युत-रेखा अनुरूप
दिखा गौरव प्राचीन अनूप
हृदय-नभ उज्ज्वल करे स-हास ४

चमक उठता है हृदय-प्रदेश,
कालिमा बन जाती है श्वेत
शब्द बिखरे होते समवेत
वन्दना करने भारत-देश ८

उमड़ पड़ती जब सरस उमङ्ग
तरङ्गित होकर लहर-समान
प्रेम-विधु का प्रतिबिम्ब अम्लान
झूलता है तरङ्ग के सङ्ग १२

देश-गौरव-उल्लसित विचार
प्रेम-रस प्लावित बने स-भार,
अधिक गद्गद हो बारम्बार
निकलते नहीं कण्ठ के द्वार १६

न जाने कितने वीर-प्रसून,
गुथे महिमा-माला में आज,
सदा रख भारत-माँ की लाज
बहा मकरन्द के सदृश खून २०

वीर भारत-जननी-पद-धूल,
शीश पर सज्जित रहे समोद
खेलने को हो उनकी गोद
उन्हें श्रद्धाञ्जलि के हैं फूल २४

प्रथम सर्ग

आज शब्दों के सरस समूह—
उठे हैं दुखद कथा की ओर
उठा करुणा की एक हिलोर
चाहते रचना गाथा-व्यूह ४

द्दगों की अश्रु-तरङ्गिनि-धार,
सींचती कभी कपोल-प्रदेश
और उसमें प्रत्येक निमेष
व्यथा करती है वृथा विहार ८

कथा का करुणामय विस्तार,
वीरता का करता सङ्केत
धूल में कैसे मिला निकेत ?
बनी विष कैसे सुरसरि-धार !! १२

उजेले ने पाया तम-रूप !
प्रेम में कैसे आई भूल ?
बने किस भाँति धूल सब फूल ?
हो गया रङ्क किस तरह भूप ? १६

✽

छिपा किस भाँति प्रभा-मय इन्दु,
बना वीभत्स सरस श्रृङ्गार !
टूट कर गिरा हृदय का हार
दृगों में क्यों आए जल-विन्दु ? २०

✽

हाय ! कैसे उजड़ा उद्यान,
हुआ अन्तर्हित कोकिल-गान
हुआ कब सौरभ का अवसान
कहाँ छिप गया मानिनी-मान ? २४

✽

जहाँ था पहिले वीर-निवास,
वहाँ बीहड़ वन का विस्तार
उल्लुओं का भीषण चीत्कार,
हिंस्र पशु का वीभत्स विलास २८

✽

कामिनी-नूपुर की झङ्कार,
जहाँ होती थी बारम्बार
वहीं पशु करते करुण पुकार
साँप भी उठते हैं फुफकार ३२

हाय ! गौरव-गर्वित चित्तौर,
हो गया दिव्य कान्ति से हीन !
हुए थे कैसे पुरुष प्रवीन,
बने थे जो जग के सिरमौर ३६

जहाँ रण का भीषण ताण्डव,
हुआ था तलवारों के साथ
हुए कितने शिशु सरल अनाथ
लड़े थे मानों कुरु-पाण्डव ४०

मेदिनी ने कर रक्त-स्नान,
न जाने कितने पाप शीश,
मृतक को दे सप्रेम आशीष,
स्वर्ग-सुख उन्हें किया था दान ४४

कभी चपला-सा चमक कृपाण
कण्ठ का करता आलिङ्गन
काल का निठुर सहायक बन
चूम उर, ले लेता था प्राण ४८

वीर-मस्तक पर था अङ्कित,
नारियों के कर का चन्दन,
रक्त का उस पर आच्छादन,
सान्ध्य शशि पर वारिद लोहित ५२

नेत्र थे वीरों के कुछ लाल,
श्वेत भागों पर था रण-मद
मिलन-अन्तिम में थे गद्गद
वही बनते थे क्रुद्ध कराल ५६

छोड़ कर घर सारा शृङ्गार,
कामिनी के कर का मृदु स्पर्श
वीरता का रख कर आदर्श
वीर देते रिपु को ललकार ६०

समर में राहु-केतु के वेष,
कर रहे थे सुख-शशि का ग्रास
विकट सुन रण-चण्डी का हास
काँप उठता था हृदय-प्रदेश ६४

कड़क कर प्रतिदल की हुङ्कार,
उठाती मन में भीषण भाव
वीरता का था नहीं अभाव
शीघ्र होता था युद्ध-विहार ६८

कभी उठ जाती थी चीत्कार,
पुनः वह बनती वाणी वीर,
तमक उठता था अरुण शरीर,
चमक उठती पैनी तलवार ७२

वीर-पत्नी के कर का पान
रँग चुका था पति के युग अधर,
लगाया उन पर रण ने रुधिर,
दूसरा पान किया क्या दान !! ७६

छोड़ कर गृह पर किङ्किणि-नाद,
सुनी वीरों ने असि-झङ्कार
छोड़ कर पत्नी-प्यार-दुलार
हृदय में भरा युद्ध-उन्माद ८०

छोड़ कर गृह पर किङ्किणि-नाद,
सुनी वीरों ने असि-झङ्कार
छोड़ कर पत्नी-प्यार-दुलार
हृदय में भरा युद्ध-उन्माद ८०

ओंठ से गई मधुर मुस्कान,
रोष से बनी भौंह भी वङ्क
हृदय हो गया पूर्ण निश्शङ्क
उठा मन में स्वदेश-अभिमान ८६

युद्ध के सञ्चालक का बल,
वीर पर युद्ध-शक्ति का भार,
शौर्य का शर में सारा सार,
दिख पड़ा सेना का कौशल ८८

कभी थे राजपूत अति न्यून,
किन्तु था प्रिय स्वदेश-अभिमान
नारियों ने भी ली असि तान
चढ़ाए रण में आत्म-प्रसून ९२

छोड़ दी मुग्धा की सब लाज,
सुलभ चञ्चलता की सब बात
सजाए वीर-वेष से गात
चल पड़ा गढ़ से नारि-समाज ९६

सरस लज्जा का लोहित रङ्ग
बन गया रौद्रपूर्ण अति लाल
यही था परिवर्तन का काल
गया अङ्गों से अजित अनङ्ग १००

तरल गति यौवन की मृदु लहर,
वीरता के तट पर थी नष्ट
फूल की सेजों पर था कष्ट
युगों-सा कटता था प्रति प्रहर १०४

आँख का छूटा था काजल,
टूट सी गए हृदय के हार
भूषणों का था तन पर भार,
मोतियों में था विष का जल १०८

लालिमा-भरे लजीले गाल,
उठ गए छोड़ मृदुल अञ्चल
हुए स्थिर, दृग जो थे चञ्चल,
दिख पड़े बिखरे-बिखरे बाल ११२

शीघ्र ही दी किङ्किणी उतार,
बाँध भी ली कटि में तलवार
छोड़ कर चुम्बन का उपहार
दृगों का त्यागा चञ्चल वार ११६

दृगों में यौवन का मृदु-मद,
हटा कर रक्खा रण-उन्माद
भुला मृदु वाणी, सीखा नाद,
नारि-पद तज, पाया नर-पद १२०

भुला कर सुखकर प्रेमालाप
भङ्ग कर मौन मनोहर मान
रखा निज मातृ-भूमि का मान,
हटे सारे सुख के सन्ताप १२४

हुआ रक्षित इस भाँति सदैव,
रक्त-सिञ्चित चित्तौर-प्रदेश
किन्तु जब रूठे थे विश्वेश,
और विपरीत हुआ था दैव १२८

जङ्गलों में भटके थे शूर,
घास पर वर्षों किया शयन
भिगोए अश्रु-कणों से नयन
क्लेश भी झेले थे भरपूर १३२

और नृप-मद में भरे यवन,
चढ़े आए सेना के सहित
किया चित्तौर चारु श्री-रहित
बनाए बन, थे जहाँ भवन १३६

मिटा नगरी का सब शृङ्गार,
नारियों ने पति भेजे समर,
किया फिर अपना व्रत 'जौहर'
यही था यवनों को उपहार १४०

किन्तु थे धन्य यहाँ के वीर,
देश-हित मरते थे स-विनोद
सजाते थे भारत की गोद,
कहाँ हैं वैसे अब रणधीर ? १४४

द्वितीय सर्ग

उठ गई थी निशि-पति की कोर,
क्षितिज-रेखा के कुछ ऊपर,
चाँदनी छाई थी भू पर,
कालिमा थी वृक्षों की ओर ४

मनोहर मन्द-प्रवाहित पवन,
चन्द्र से चारु चाँदनी छीन,
उड़ा लाया भू पर स्वाधीन,
ढूँढ़ता है कोई उपवन ८

आ गई नभ में तारक-माल,
खिल गए मानों सुन्दर फूल,
गया है शशि उनमें पथ भूल
अभी तो है वह भोला बाल १२

हाथ में लिया एक लघु फूल,
गूँथना चाहा उसे स-चाव
किन्तु आया लज्जा का भाव,
गिरा वह, और लग गई धूल ४८

चौंक कर लिया दूसरा सुमन,
लगाया लोचन से सविराम,
किन्तु क्या सोच, लिया फिर थाम,
हुआ उसका भी वहीं पतन ५२

नयन-तट पर थी लाज-हिलोर,
अधर-पट भी थे किञ्चित मुक्त,
भाल था स्वेद-विन्दु से युक्त,
देखते थे दृग पग की ओर ५६

लोचनों पर था मुग्धा-भाव,
ओंठ में छिपी हुई मुस्कान
लगा था यद्यपि पति का ध्यान
किन्तु थे लज्जा के सब हाव ६०

हिला देता था मन्द समीर,
श्याम अलकावलि के कुछ बाल,
कुसुम-से मृदु कपोल थे लाल
यही दिखलाता झीना चीर ६४

कभी यदि हिले वृक्ष के पात,
सोचती—"आए जीवन-नाथ'
देखती थी लज्जा के साथ
अरुण हो जाता था सब गात ६८

फेक कर तिरछी-सी चितवन,
हटा कर कुछ अपना अञ्चल,
देखती थी होकर अविचल,
शीघ्र बिखरा अञ्जलि के सुमन ७२

कभी धीरे-धीरे ले सुमन,
बनाती थी छोटा-सा हार,
न जाने क्या-क्या सरस विचार
फूल के बदले करती ग्रथन ७६

सजाए कुछ गुलाब के फूल,
किन्तु फिर उनको दिया बिखेर,
प्रकृति को दोष दिया, मुख फेर,
लगाए जिसने उनमें शूल ८०

भावनाओं का यह मिश्रण,
हो रहा था मन में प्रति-पल,
प्रतीक्षा से था हृदय विकल
युगों-सा जाता था प्रति-क्षण ८४

प्रतीक्षा का था ओर न छोर,
उमड़ पड़ता था कुछ उल्लास,
किन्तु दृग थे लज्जा के दास
लगे थे वे भी पथ की ओर ८८

किन्तु पीछे से कर-पल्लव,
उठे, जिन पर प्रस्वेद की बूँद,
लिए करुणा के युग-दृग मूँद,
यही था अभिनय क्या अभिनव ! ९२

ओंठ पर आई मृदु मुस्कान,
हाथ लज्जा से झुके समोद,
वचन भी मुख में रुके समोद,
कपोलों पर था ऊषा-स्थान ९६

मिले कर-दृग में सहित-दुकूल,
कपोलाधर का हुआ मिलन
खिले तब दोनों वदन-सुमन
हुए लज्जित उपवन के फूल १००

मिले थे प्रेमी युगल किशोर,
बही थी प्रेम-सुधा की धार,
इन्दु की सुधा बनी निस्सार
यहीं था झाँक रहा शशि-चोर १०४

अधर में पाया था मधु-सार,
करों में कल्प-लता आनन्द
वदन ही में पाया था चन्द
मिलन में नन्दन का सुविहार १०८

विलग हो गए लजीले वदन,
किन्तु कर का था अब तक मिलन,
यदपि मुख से न निकाले वचन,
किन्तु पाया था स्वर्ग-सदन ११२

उठ गए करुणा के मृदु हाथ,
लिए फूलों की छोटी माल,
कण्ठ में पति के दी वह डाल,
बड़ी अनुराग-रीति के साथ ११६

लोचनों का था मिलन-समय
हुए दोनों के कर सन्नद्ध
हो गए बाहु-पाश में बद्ध
प्रेम-लीला का था अभिनय !! १२०

तृतीय सर्ग

शान्ति के दिन जाते हैं बीत,
न जाते लगती कुछ भी देर,
दिनों के हो जाते हैं फेर,
लीन होते विस्मृति में गीत ४

हरे पल्लव हो जाते पीत
उषः का हो जाता है अन्त
मञ्जु मुख में आते हैं दन्त
शान्त मन हो जाता भयभीत ८

जरावस्था की विषम हिलोर,
बहा देती है यौवन-रङ्ग
रुचिर रँगवाले विविध विहङ्ग
भागते शीघ्र शून्य की ओर १२

विलग हो गए लजीले वदन,
किन्तु कर का था अब तक मिलन,
यदपि मुख से न निकाले वचन,
किन्तु पाया था स्वर्ग-सदन   ११८

❦

उठ गए करुणा के मृदु हाथ,
लिए फूलों की छोटी माल,
कण्ठ में पति के दी वह डाल,
बड़ी अनुराग-रीति के साथ   ११६

❦

लोचनों का था मिलन-समय
हुए दोनों के कर सन्नद्ध
हो गए बाहु-पाश में बद्ध
प्रेम-लीला का था अभिनय !!   १२०

तृतीय सर्ग

शान्ति के दिन जाते हैं बीत,
न जाते लगती कुछ भी देर,
दिनों के हो जाते हैं फेर,
लीन होते विस्मृति में गीत ४

हरे पल्लव हो जाते पीत
उषः का हो जाता है अन्त
मञ्जु मुख में आते हैं दन्त
शान्त मन हो जाता भयभीत ८

जरावस्था की विषम हिलोर,
बहा देती है यौवन-रङ्ग
रुचिर रँगवाले विविध विहङ्ग
भागते शीघ्र शून्य की ओर १२

ग्रीष्म का भीषण प्रखर प्रताप,
जलाता सौरभवान वसन्त
सुछवि का हो जाता है अन्त,
पुण्य हट, आ जाता है पाप १६

यही जग मकड़ी-जाल स्वरूप,
खिंचे नीरस विषयों के तार
शीघ्र ले चक्र-व्यूह आकार,
रजत किरणों का रखते रूप २०

अरे, यह क्षणभङ्गुर संसार,
पलटता है पट विविध प्रकार
वृद्ध में परिवर्त्तित सुकुमार—
शीघ्र कर, रखता वस्तु असार २४

शीघ्र सित होते काले केश,
प्रेम में आ जाती है ग्लानि,
प्रणय की हो जाती है हानि,
शीघ्र शिशु रखता जर्जर-वेश २८

अटल नियमानुसार सुख-काल,
शीघ्र ही हो जाता दुखमय,
सुधा हो जाती है विषमय,
लताएँ हो जाती हैं व्याल ३२

देवि करुणा के प्यारे नाथ,
बने थे वे चित्तौराधीश,
उदित था सुख ही का नलनीश,
सभी थे परम शान्ति के साथ ३६

वहाँ था मधुमय शान्ति-विलास,
सदा होता था सौख्य विहार,
नगर का होता था शृङ्गार,
सभी सुख था चरणों के पास ४०

शान्ति से थे राणा संग्राम,
दुन्दुभी सुख की गुँजा सहास
सुखों का करती विमल विकास
पूर्ण करती थी सारे काम ४४

किन्तु कुछ ही दिन में अति शोक—
छा गया नगरी में सत्वर,
पुरजनों में भी आया डर,
मिट गया सुख-शशि का आलोक ४८

सभी थे भारी चिन्ता-ग्रस्त,
हृदय क्षण-क्षण होते कम्पित,
हो रहे थे पुरजन शङ्कित
हृदय में बने पूर्णतः त्रस्त ५२

उदासी छाई थी पुर में,
वहा था अविरत करुणा-नद
सुखों के साज बने दुखप्रद,
छा गई कातरता उर में ५६

राज-दरबार बना था मूक,
वीर संग्राम हुए थे मौन
बोल सकता था सैनिक कौन ?
सभी के हृदय उठी थी हूक ६०

देख निस्तब्ध हुए सब वीर,
अन्त में श्री राणा संग्राम,
प्रेम से ले 'हर' 'हर' का नाम,
बोलने लगे हृदय रख धीर ६४

यवन बाबर ने यह फ़रमान
भेज कर दी है यह ललकार—
'जङ्ग को हो जाओ तैयार
अगर तुम बनते हो इन्सान' ६८

लिखा है "रक्खेंगे इस्लाम,
काफ़िरों को दोज़ख़ में भेज,
सुना है अगर नाम चङ्गेज़
ख़ुदा को मानो, छोड़ो राम ७२

"अगर कुछ हिम्मत का है नाम,
तेग़ ले कर लो आकर जङ्ग
नहीं तो रख ग़ुलाम का ढङ्ग,
ख़ुदा का ले लो नेक कलाम" ७६

"वीरगण! यदपि सैन्य है न्यून,
किन्तु हम मातृभूमि की लाज,
रखेंगे मर कर भी हम आज,
बहा देंगे सब अपना ख़ून ८०

"यही निश्चित है—होगी हार,
कहाँ थोड़े से हैं रजपूत,
किन्तु हैं यवनों के यमदूत,
भूमि पर होने को बलिहार ८४

"मान पर मरने को तैयार,
शीघ्र देते हैं रण का दान,
हृदय में है स्वदेश-अभिमान
उसी का मन में है जयकार ८८

"न मरने की है कुछ परवाह,
रहे माता का केवल मान
रहे मर्यादा का अभिमान
नहीं धन-वैभव की है चाह ९२

मातृ-भू की रख सिर पर धूल,
हाथ में सब ले लो तलवार
युद्ध-हित हो जाओ तैयार
दैव भी चाहे हो प्रतिकूल ६६

अगर हममें है धर्म-विचार
और संख्या भी हो परिमित
शीश हों चाहे रण-अर्पित
किन्तु गुण गावेगा संसार १००

जहाँ तक हो हममें शुभ शक्ति,
रहे रक्षित चित्तौर-प्रदेश,
हृदय में अब भर लो आवेश,
शक्ति के सहित रहे भू-भक्ति १०४

हमारा सुखकर नारि-समाज,
स्वयं कर लेगा अपना कार्य
जानते हो, वह भी है आर्य,
रखेगा वह भी अपनी लाज १०८

उठो, कर में ले लो तलवार,
धर्म पर हो जाओ बलिदान,
तुम्हीं चित्तौर-भूमि के प्राण,
चकित कर दो, सारा संसार ११२

चतुर्थ सर्ग

न जाने बीता कितना काल,
गईं कितनी रातें भी बीत,
ग्रीष्म-ऋतु बीते पावस-शीत
बहुत से बीते प्रातःकाल ४

उगे तारे भी कितनी बार,
चन्द्र ने चूमा नभ सौ बार,
उषा ने किया अरुण शृङ्गार
सुमन ने लिए कई अवतार ८

आम्र ने बौर अनेकों बार
सजा कर किया भ्रमर-आह्वान
कोकिलाओं ने गाकर गान
लिया वनवास अनेकों बार १२

घूम कर काल-चक्र अविराम,
बहुत करता था परिवर्त्तन
पर न आप करुणा के धन
हृदय-आधार वीर संग्राम १६

युद्ध में लड़े सकौशल वीर;
दिखाया राणा ने उत्कर्ष
वीरता का रक्खा आदर्श
रक्त से भरा समस्त शरीर २०

यदपि राणा का रण-कौशल
युद्ध में दर्शनीय था, हाय !
किन्तु कोई भी था न उपाय !!
राजपूतों का हारा दल २४

क्योंकि थे यवन अमित संख्यक,
और थे आर्य बहुत ही कम
कहाँ सकते थे रण में थम ?
शौर्य में थे पर वे अन्तक २८

शीघ्र घायल होकर संग्राम,
शिविर में लौट गए असहाय
जीत का कोई था न उपाय
किया बाबर ने रण में नाम ३२

विजय थी यवनों ही की ओर,
गए थे राजपूत सब हार
खुला था उन्हें स्वर्ग का द्वार
यवन का बढ़ा भूमि पर ज़ोर ३६

हुआ करुणा का भाग्य विफल,
सभी टूटे आशा के तार,
हुए अति मलिन सभी शृङ्गार
न पड़ती थी छिन भर भी कल ४०

न पाया जब कुछ भी सम्वाद
हुआ करुणा का व्यथित हृदय,
बढ़ा क्षण ही क्षण मन में भय,
विरह से हुआ विषम उन्माद ४४

भाग्य था करुणा के प्रतिकूल,
हो गया हृदय अतीव अशान्त
हुआ हा ! राणा का प्राणान्त
हो गई ईश्वर की क्या भूल ! ४८

नाश का जुड़ा सभी सामान,
हुआ किस भाँति भाग्य का फेर
दुखों ने लिया राज्य को घेर
हो गया राज्योन्नति अवसान ५२

हो गया नृप-शशि निष्प्रभ अस्त,
अँधेरा हुआ राज्य-प्रासाद
छा गया चारों ओर विषाद,
हो गए राज्य-अङ्ग सब व्यस्त ५६

हृदय-वेधक यह भारी क्लेश,
सहे कैसे करुणा करुणेश !
रखे कैसे वह विधवा-वेश ?
बिखर जावेंगे उसके केश ६०

पञ्चम सर्ग

महल का खुला हुआ था द्वार,
रहा था उसमें चमक प्रकाश,
वहीं करुणा थी परम उदास,
हृदय में उठते विविध विचार ४

बना अपना मलीन वर वेष,
दिए थे त्याग सभी शृङ्गार
दृगों पर अञ्जन भी था भार,
पुष्प से थे न सँवारे केश ८

अहर्निश प्रभु-आराधन-लीन,
यही ईश्वर से करती विनय—
"नाथ ! स्वामी ही की हो विजय
राज्य में वे ही हों स्वाधीन १२

अगर रिपु-सेना ही है अमित,
प्रभो ! फिर ऐसा रचना ढङ्ग
शत्रु-सेना हो जावे भङ्ग,
वज्र तव अरि पर ही हो पतित १६

अगर घूमे पति पर तलवार,
फूल-सी रहे कवच पर भूल,
तुम्हारी कृपा रहे अनुकूल,
बचा जावें वे तीखे वार २०

समर का जब हो पूर्ण वेग,
और तीरों की हो बौछार,
वायु से टूटे शर की धार,
बोथले हो भू गिरें सवेग २४

तुम्हारी कृपा-कोर का छत्र
सदा दे उन पर छाया डाल,
रक्त हो उनको चन्दन लाल
रण-स्थल में घूमें सर्वत्र २८

काल-सी उनकी हो तलवार,
शत्रु की छाती को दे चीर
सहायक रहें हमारे वीर
करें वे भी रिपु-ओर प्रहार ३२

कुशल से जो आवेंगे नाथ
उन्हें पूजूँगा बड़े सप्रेम
प्रभो ! वे रहें सदैव सक्षेम
और निर्भयता के भी साथ ३६

सजा दूँगी चित्तौड़ प्रदेश
सेवकों को देकर आदेश,
प्रभो ! रख कर निज मङ्गल वेश,
तुम्हारी पूजा करूँ विशेष ४०

उठेगा दल में हर्ष अपार,
उसी में रिपु का हाहाकार,
शीघ्र मिल जावेगा एक बार,
तुम्हारा भी तो जय-जयकार ४४

जानते हो तुम सारे काज,
तुम्हें क्या समझाऊँ जगदीश
झुकाती बार-बार हूँ शीश
शीघ्र रख लेना मेरी लाज ४८

❦

हर्ष से आ जावें पति भवन,
आर्य-वीरों को लेकर साथ,
उसी क्षण हे अनन्त के नाथ!
तुम्हारा होगा आराधन" ५२

❦

इसी विधि करती करुणा विनय,
आँख से गिरती थी जल-धार
सुनाती अपने करुण विचार—
"नाथ का पथ हो मङ्गलमय" ५६

❦

अचानक दासी आई एक,
बहाती आँसू थी अविराम
शब्द जो कहती थी सविराम
प्रकम्पित होता था प्रत्येक ६०

❦

कभी कर उठती थी चीत्कार,
कभी हो गया कण्ठ था रुद्ध
शब्द थे नहीं निकलते शुद्ध,
जरा का था शब्दों पर भार ६४

रुदन करती थी कभी सशोक
निकल जातीं थी मुख से आह
आँख में पानी, मन में दाह
सिसकियाँ भी न सकी थी रोक ६८

गिर पड़ा भू पर वृद्ध शरीर,
फैल भी गए भूमि पर केश,
हो गया मलिन जरामय वेश
हो गया अस्त-व्यस्त सब चीर ७२

चौंक कर करुणा हुई सभीत,
हो गए विस्फारित युग नैन,
न निकले सहसा मुख से बैन
धैर्य को लिया शोक ने जीत ७६

अमङ्गल का था मन में चित्र,
वदन पर हुआ वही अङ्कित
हृदय जो रहता था शङ्कित
वही अस्थिर हो उठा विचित्र ८०

उसी वृद्धा का थामे हाथ,
शीघ्र बोली वह कातर वचन—
"कहाँ हैं मेरे जीवन-धन!
कहाँ हैं मेरे जीवन-नाथ!! ८४

युद्ध में किसकी रही विजय,
काम आए कितने वर वीर
कहाँ मेरे प्रियतम रणधीर?
कहाँ करुणा के करुणामय!! ८८

शीघ्र कह दे मङ्गल-सम्बाद,
हृदय को दे दे थोड़ी शान्ति
हटा दे मन की सारी भ्रान्ति,
सुना दे प्रियतम का जयवाद" ९२

वचन सुन वृद्धा रोई और,
अधिक हो गए स्पष्ट मुख-भाव
अधिक उमड़ा आँसू का स्राव
कहा रुक-रुक कर...हा...चि...तौ...र ९६

❧

ससकियाँ भर कर बोली, "हाय !
महारानी ! हो गया विनाश,
हो गया सभी सैन्य का नाश
हो गई मातृभूमि असहाय १००

❧

युद्ध में राणा ने ललकार,
किया विचलित यवनों का दल,
किन्तु घावों से हो निर्बल,
तज दिया यह नश्वर संसार !" १०४

❧

इन्हीं अन्तिम शब्दों का नाद,
बन गया प्रलय-काल का घोष,
काल का था जीवान्तक रोष
मृत्यु-हुङ्कार बना सम्वाद १०८

❧

गिर पड़ी करुणा लता समान,
नहीं था जिसको कुछ आधार
टूट कर बिखर गया वह हार
नाथ-हित गूँथा जो सुख मान ११२

हो गई क्षण में पूर्ण अचेत,
न निकला मुख से कोई वचन,
एक चीत्कार, एक ही ध्वनि,
उसी से गूँजा सभी निकेत ११६

गाल पर बिखर गए सब केश,
रखे थे अञ्जलि में जो फूल,
गिर पड़े, उनमें बिखरी धूल
बन गया अविदित विधवा-वेश १२०

अश्रु की एक न निकली बूँद,
चुक गया था आँसू का कोष,
किया शोकानल ने था शोष
लिए करुणा ने लोचन मूँद १२४

षष्टम सर्ग

गगन में ऊँचे चढ़े मयङ्क,
निशा ने रचा सभी शृङ्गार,
व्योम में करने लगी विहार,
सजाया तारों से निज अङ्क ४

चाँदनी भी फैली सब ओर,
लता, सुमनों ने त्याग सुवास
पवन में झूला मन्द सहास
न उनमें था अब मधुकर चोर ८

चाँदनी "सती थी सविनोद,
लता-पल्लव देते थे ताल
नाचते थे प्रसून मृदु-बाल
सजा कर माँ-लतिका की गोद १२

सरोवर में जल-केलि-विलास,
तरङ्गों से करता था चन्द
लहर से लिपट-लिपट आनन्द—
ले रहा था वह समुद, सहास १६

मनोहर नव उपवन के बीच,
शयित थी करुणा संज्ञा-
और थी मङ्गल-वेश विहीन
भाग्य ने मानों ली छवि खींच २०

कुञ्ज के मध्य लता के पास,
जहाँ था मधुर सुमन का वास
जहाँ पड़ता था चन्द्र-प्रकाश,
वहीं करुणा का था कच-पाश

चन्द्र का छनता हुआ प्रकाश,
कुञ्ज-लतिका में से आगत,
कर रहा था कच का स्वागत,
खेलता मुख पर वही उदास २८

पवन भी हिला-हिला कर बाल,
उठाने का करता था यत्न
गिरा क्यों था यह नारी-रत्न
जगाने की चलता था चाल ३२

✿

शोक-रेखाओं से अङ्कित,
हुआ था करुणा का वर वदन
रुदन के समय अश्रु के कन
कपोलों पर अब भी थे पतित ३६

✿

लगी जब शीतल-मन्द समीर,
घ्राण-गोचर जब हुई सुवास
चली कुछ वेग सहित तब साँस
हिला करुणा का मृदुल शरीर ४०

✿

ओठ भा धीरे से कुछ हिले,
आँख की दृष्टि उठी नभ-ओर,
अचानक स्मृति की उठी हिलोर
पुराने दुख-विचार आ मिले ४४

✿

हुआ जब करुणा को कुछ चेत,
हृदय हो गया हज़ारों खण्ड
उठा दुख मन में परम प्रचण्ड
देह की कान्ति हुई सब ! वेत ४८

हृदय से उमड़ पड़ा उछ्वास,
नेत्र में अन्धकार था आह !
चला आँसू का अमित प्रवाह !
तनिक रुक कर ओठों के पास ५२

वायु में गूँजा हाहाकार,
सिसकियों की आई प्रतिध्वनि
आह भर-भर कर मृगलोचनि
भूमि पर उठ बैठी एक बार ५६

गए सब बिखर मनोहर बाल
आह ने जला दिए कुछ सुमन
आँख पर रख कर अञ्चल-वसन
जानु पर झुका दिया निज भाल ६०

उठा करुणा का करुण विलाप
दिशाओं में भी हुआ रुदन
वायु ने उसका करके वहन
लता को हिला, दिया सन्ताप ६४

उ

अश्रुओं के छाए जब घन,
झुक गए नीचे को लोचन,
नहीं कर सकते भार वहन,
सिंच गया शोक-प्रज्वलित मन ६८

उ

उठे नभ ओर नयन जल-साथ
हुआ कम्पित शरीर मृतप्राय
सिसकियाँ लेकर बोली, "हाय!
कहाँ हो हे करुणा के नाथ!! ७२

उ

हृदय-मन्दिर के देव अनूप,
कहाँ हो मेरे जीवन-धन
आह! यह सूना है उपवन
कहाँ हो मेरे प्राण-स्वरूप!! ७६

उ

न कर पाई अन्तिम दर्शन,
रूठ कर चले गए क्या हाय !
न कर पाई मैं तनिक उपाय !
रोकने का हे जीवन-धन !! ८०

सजाया था मैंने उपवन,
सदा करने को समुद विहार
छोड़ कर चले गए संसार,
हो गए दासी से क्या विमन ? ८४

हो गया था कोई अपराध,
हो गई थी यदि मुझसे भूल,
क्षमा करते होकर अनुकूल
वियोगाम्बुधि है नाथ ! अगाध ८८

यही है प्रथम-मिलन का स्थान,
यहाँ पर तुम आए थे नाथ !
बड़ी ही उत्सुकता के साथ,
छुड़ाने मेरा मधुमय मान ९२

प्रान लेता है अब वह मान,
नाथ ! मैं हाय !! गई क्यों रूठ,
मानना मान सदा वह भूठ,
रूठना मत मेरे भगवान ९६

छिप थे पीछे से दृग बन्द,
नाथ ! मेरे तुमने आकर,
न बोली मैं कुछ सकुचा कर,
दिया था मुझे मिलापानन्द १००

कहाँ हो मेरे हृदय-प्रकाश,
बहाते हैं आँसू युग-दृग
तुम्हारे धोती इनसे पग,
अगर होते तुम मेरे पास १०४

प्रेम-आँसू भर होती मौन,
पोंछते थे जतला कर प्यार
उमड़ती है आँसू की धार,
पोंछने अब आवेगा कौन ? १०८

फूल लेकर गूँथी थी माल,
चाव से पहिनाई थी नाथ,
बड़ी ही उत्सुकता के साथ,
मनोरम था वह रजनी-काल ११२

वही रजनी भी है इस समय,
खिले भी तो हैं सुन्दर सुमन
उपस्थित भी है मेरा तन
किन्तु है कहाँ आपका प्रणय ? ११६

रजनि का कैसा था अभिनय
और शोभित भी थे रजनीश
फूल हिल, देते थे आशीष
प्रकृति का कैसा था वह समय ! १२०

हो गया हाय ! प्रणय का लोप,
नहीं हैं मेरे करुणामय
इसी उपवन में लगता भय,
हुआ है वाम देव का कोप !! १२४

अरे शशि के हे निठुर प्रकाश !
मुझे भी ले किरणों से खींच
स्वर्ग में प्रियतमाङ्क के बीच—
मुझे बिठला दे आज सहास १२८

मुझे प्रभु ! कलिका रचो उदास
जहाँ खिल कर दुख से निष्प्रभ,
हृदय-भावों का सब सौरभ
भेज दूँ मैं प्रियतम के पास १३२

बना दो अथवा मुझको लहर,
उमड़, तट पर ठोकर खाकर,
नाम प्रियतम का गा-गाकर,
नष्ट हो जाऊँ पत्थर पर १३६

बना दो निशा मुझे हे राम !
जहाँ नभ में खोजूँ मैं नाथ !
नाम-स्मृति लेकर सुख के साथ,
गूँथ डालूँ तारों से नाम १४०

बनूँ मैं अथवा वारि-विलास,
सूर्य के उष्ण ताप से जल,
सुखा डालूँ मैं तन कोमल
वाष्प बन, उड़ जाऊँ प्रिय-पास १४४

अरे ऐ चन्द्र अरे निष्ठुर !
घूमता सभी विश्व में रोज़
कहीं पाई प्रियतम की खोज,
बता, वे बसते हैं किस पुर ? १४८

नहीं, यह सारा जग है झूठ,
खेलते आँख-मिचौनी नाथ !
अभी आते होंगे स्मिति-साथ,
तनिक भी वे न गए हैं रूठ १५२

हाय ! दुखिनी के हे अवलम्ब !
विश्व-जननी ! पहुँचे किस ओर,
कहाँ, की किस पर करुणा-कोर
उन्हें दे दो सुधि मेरी अम्ब ! १५६

अरे, हो गई बहुत ही देर,
न आए अब तक जीवन-धन,
किया क्या सचमुच स्वर्ग-गमन,
आँख क्या मुझसे ली है फेर? १६०

अगर नन्दन-कानन के फूल,
रिझाते हैं उनका तन-मन
सजाऊँगी उनसे उपवन
किन्तु वे हो जावें अनुकूल!! १६४

भूल कर आ जावें एक बार,
मनाऊँगी अपने हृदयेश
बना कर अपना मालिनि-वेश,
भेट में दे दूँगी यह हार १६८

जभी वे पूछेंगे परिचय,
कहूँगी ये—"करुणा"* के फूल
न प्यारे! इनको जाना भूल,
करो लो, इनको मङ्गलमय १७२

* करुणा = (१) रानी का नाम (२) एक प्रकार का पुष्प

मुझे लख कर भी यदि प्राणेश,
अपरिचित-पट में जावें भूल
कहूँगी—"यदि पहिचाने फूल
छोड़ दूँ अपना मालिनि-वेश" १७६

किन्तु वे आवेंगे क्यों हाय !
गए हैं मुझको हा ! हा ! भूल !!
फूल ये हैं न, हृदय के शूल !
करूँ जग-जननी ! कौन उपाय ? १८०

हाय ! अब तो आओ हे नाथ !
बिलखती दासी है हो विकल,
तुम्हारे बिना जगत है विफल,
सुनाऊँ किसको दुख की गाथ ?" १८४

सिसकियाँ ले-ले, भर-भर आह,
कर रही थी वह करुण विलाप
हृदय में बढ़ता था सन्ताप
हो रही थी भीषण उर दाह १८८

दिशाओं में भी हुआ रुदन,
हो गई करुणा संज्ञाहीन
हो गया उपवन भी स्वरहीन
पर न आप करुणा के धन १६२

सप्तम सर्ग

बह रही थी दृग से जल-धार,
शोक में करुणा थी जब मग्न
ध्यान में पति के थी संलग्न
बीतते थे रोते जब वार ४

रात्रि में तारों पर थी दृष्टि,
दिवस में रहती सदा उदास
सदा लेती थी उष्णोच्छ्वास
शोक-भावों को होती सृष्टि ८

हो गईं थीं आँखें-युग लाल,
भीगते जल से कलित कपोल,
निकलता था रुक-रुक कर बोल
बीतता था जब दुख में काल १२

उस समय कुछ आशा की कोर,
भाग्य में निकली एक सहास,
कालिमा में कुछ हुआ प्रकाश,
नेत्र चमके आशा की ओर १६

आँख में करुणा-जल के सङ्ग,
हर्ष के विन्दु समाए सरस,
विरस ओष्ठों पर पहुँचा सु-रस,
शुष्क अङ्गों में आया रङ्ग २०

कलित करुणा की सुन्दर गोद,
भर गई शिशु से परम पुनीत
रानियों ने गाए शुभ गीत
उठ गया चारों ओर प्रमोद २४

वीर संग्राम-मृत्यु का शोक,
हट गया—सुन कर यह सम्वाद
हुआ सब ओर परम आह्लाद,
हुआ फिर सुख-शशि का आलोक २८

दैव ने मानों पति के साथ,
किया सुत का था परिवर्तन
निकल लतिका से पड़ा सुमन
बाल दे छीना जीवन-नाथ ३२

अहा ! बालक सुन्दर सुकुमार,
सजाता था करुणा का अङ्क
उदित था मानों मधुर मयङ्क
प्रकाशित करता था नृप-द्वार ३६

मनोमोहक था उसका वदन,
उदित था शशि-सम सुत अभिराम
इसी से रखा—"उदयसिंह" नाम
रूप रख आया है क्या मदन ? ४०

सुचिक्कण काले-काले केश,
कान्ति मुख की थी क्या कमनीय !
न होती थी इच्छा दमनीय—
एक चुम्बन की—लख कर वेश ४४

सुकोमल थे छोटे से हाथ,
लालिमा का था मुख में वास
जब कभी होता वदन सहास
ललिमा बढ़ती स्मिति के साथ ४८

न स्थिर होते रहते चञ्चल,
सदा शिशु के पग कर अम्लान
किया करता था पितु-आह्वान,
उठा नभ-ओर हाथ कोमल ५२

सदा करता था लीला ललित,
मातृ-मन में लाता सन्तोष
बढ़ाता था नित सुख का कोष,
सुमन-सा खिलता था वह कलित ५६

अष्टम सर्ग

पुत्र-वर्षोत्सव था मङ्गल,
उल्लसित था सुख से रनिवास
[illegible]र सहास,
बन गया सुख का युग प्रतिपल ४

बन गई थी जब करुणा मुदित,
हो रही थी शिशु पर बलिहार
डालती थी हाथों के हार
शान्ति-शशि मन में था जब उदित ८

देखती थी शिशु-छवि अविराम,
खिलाती थी वह सुन्दर खेल,
बढ़ाती पुत्र-स्नेह की वेल,
मधुर उससे कहलाती नाम १२

प्रेम का वह प्यारा उपहार,
सहारा जीवन का अभिराम,
"उदैछी" कहता था निज नाम
ताल दे कर जतला कर प्यार १६

कभी कहता था "माँ, जब लन,
कलूँगा लेकल मैं तलवाल
तुमें मैं दूँगा हीला-लाल
मआँलानी जाओगी बन २०

"अबी तुम छोती लानी ओ न ?
तुमें मैं पैनाऊँगा मुकुत
पाछ जब ओगी छैना बउत
कलेगा बलाबली पिल कौन ?" २४

यही होता था बाल्य-विलास,
मातृ-मन में था नव उल्लास
बुद्धि का करती विमल विकास
सदा रख शिशु वह अपने पास २८

किन्तु कुछ दिवसों में सम्वाद,
यही आया मन्त्री के पास
राज्य का होता जाता नाश
सेवकों में है राज्योन्माद ३२

नहीं है कुछ प्रबन्ध का नाम
राज्य में है अशान्ति सब ओर,
हो रहे सेवक स्वार्थी, चोर,
राज्य का बिगड़ गया सब काम ३६

ग़दर मचने का बढ़ता डर,
बन रहे बाग़ी सूबेदार,
हो रहे लड़ने को तैयार
न देता है कोई भी कर ४०

डूबता है राजा का नाम,
बिगड़ती है सुराज्य की नीति
परस्पर रही न बिलकुल प्रीति
बुरा होता जाता परिणाम ४४

उठ रहा दीनों का स्वर करुण,
हो रहे भारी अत्याचार
सभी करते हैं धन को प्यार
भूमि वध से होती है अरुण ४८

राज्य की दशा देख कर हाय !
आ रहा चढ़ा बहादुर शाह
राज्य लेने की उसको चाह—
कौन सा जावे किया उपाय ? ५२

हाय ! लुट जावेगा चित्तौर
सभी वैभव अब होगा नष्ट
रानियों को होगा अब कष्ट
यही बातें होतीं सब ठौर ५६

शीघ्र दो रानी को अब ख़बर,
करें वे कार्य शीघ्र अनुकूल,
करोगे यदि इसमें कुछ भूल,
उठेगी बस विप्लव की लहर ६०

शीघ्र करना है बहुत उपाय,
बहादुर शाह लिए दल-यवन,
करेगा अपने यश का पतन
हरेगा आर्य-नारि-समुदाय ६४

सुना जब करुणा ने सम्बाद,
उठी करुणा की भारी लहर
क्रोध से काँप गई थर-थर,
आ गई पति की भी कुछ याद ६८

क्रोध-करुणा का था मिश्रण,
उधर था राज्य, इधर पति-ध्यान
हो गई क्रुद्ध, हो गई म्लान,
रोष से जली, गिरा जल-कण ७२

याद कर पति की, बोली वचन,
"तुम्हारी अनुपस्थिति में नाथ !
हो रही प्रजा मलीन अनाथ !
कहाँ हो मेरे जीवन-धन !! ७६

हो रहा है क्या अब विप्लव,
आर्त की उठती करुण-पुकार
तुम्हारे बिना राज्य का भार,
उठे कैसे हे प्रियतम अब ? ८०

देखने आओ, शिशु-मुख यदि न,
शीघ्र ही आओ सुन चीत्कार,
देख लो भीषण अत्याचार,
देख लो भाग्य-दोष के कु-दिन !" ८४

शीघ्र ही ले विवेक-आधार,
शीघ्र रख अपने मन में शान्ति,
धैर्य ले, खोकर मन की क्लान्ति,
जोड़ कर आशाओं के तार ८८

बुलाया मन्त्री को तत्काल,
कहा फिर जतला कर कुछ क्रोध,
उसे जिससे हो कुछ रण-बोध,
आँख कर तत्क्षण अपनी लाल ९२

"कहो! मैं क्या सुनती हूँ आज,
राज्य में होता हाहाकार
दीन पर होता अत्याचार
जा रही अबलाओं की लाज ९६

यही क्या राज्य-कार्य का ध्यान,
यही क्या राज्य-कार्य का भार
यही क्या देते प्रत्युपकार
यही क्या राजपूत-अभिमान? १००

दीन का सुन कर हाहाकार,
क्यों न ये फट जाते हैं कान?
यही क्या रखा प्रजा का ध्यान?
अरे, सौ बार तुम्हें धिक्कार १०४

यही क्या राजा का है ऋण,
यही क्या राज्य-कार्य है ज्ञात?
महल में पड़े हुए दिन रात—
तोड़ते नारि-सदृश हो तृण? १०८

सैन्य की संख्या है क्या ज्ञात,
और कितने हैं गढ़-रक्षक ?
कहाँ हैं सब सेना-नायक ?
क्यों न करते हो मुझसे बात ? ११२

यही क्या राजाज्ञा पालन,
यही क्या मन्त्री का है धर्म ?
यही क्या यशदायक है कर्म ?
मौन क्यों गए आज तुम बन ?" ११६

कहा मन्त्री ने निज कर जोड़,
"महारानी ! मैं हूँ निर्दोष,
शून्य हो गया राज्य का कोष,
कार्य भी दिया सभों ने छोड़ १२०

न कोई भी करता है काम,
सभी तृष्णा के हैं अब दास,
नहीं हैं जब राजा भी पास,
भला, क्यों अच्छा हो परिणाम ? १२४

सभी बनते हैं स्वयं स्वतन्त्र,
राज्य-सेवा अब मानें पाप,
छिपा राणा का सभी प्रताप,
'स्वार्थ-सेवा' है मन का मन्त्र १२८

शक्ति का रहा न अब सञ्चय,
बना हूँ मैं अतिशय निर्बल,
सभी करते हैं मुझसे छल,
मिल चुका इसका है परिचय १३२

न धन है और न कुछ सन्मान,
सभी देते हैं मुझको दोष,
किया करते हैं मुझ पर रोष,
नित्य ही करते हैं अपमान १३६

राज्य-सेना का सब सङ्गठन,
हो चुका है अब नष्ट-प्राय,
यही मुझको दिखता अभिप्राय,
सभी जावेंगे बागी बन १४०

आह ! होता है जब यों पतन,
आ रहा यवन बहादुरशाह
चाहता करना राज्य तबाह,
इसी पर तो है उसका मन १४४

'न सेना है अपनी पर्याप्त,
यवन-सेना है आह ! अपार
फिर न क्यों हम जावेंगे हार ?'
भाव है यह नगरी में व्याप्त १४८

कीजिए आज्ञा मुझे प्रदान,
शीघ्र मैं उसको कर दूँ आज !
बचा लें मातृ-भूमि की लाज,
प्रजा-रक्षा पर भी दें ध्यान !" १५२

सुने जब करुणा ने ये वचन,
मौन बन कर नीचे को देख—
भूमि पर नख से खींची रेख,
उठाए फिर अपने लोचन १५६

उस समय उन लोचन में आह !
　　दिख पड़ा करुणा का कुछ रङ्ग,
　　देख पाते यदि उन्हें कुरङ्ग;
शीघ्र हो उठता मन में दाह　१६०

श्याम, मृदु श्वेत और कुछ लाल,
　　दिख पड़े अश्रु-विन्दु के साथ,
　　हुए थे मानों नयन सनाथ—
त्रिवेणी-सङ्गम से उस काल　१६४

कहा करुणा ने लेकर आह,
　　"मन्त्रि ! मैं क्या आज्ञा दूँ आज ?
　　अकेले कैसे रख लूँ लाज
किसी को जब न रही परवाह ? १६८

शक्ति का पूरा हुआ अभाव,
　　मातृ-भू का न रहा जब ध्यान
　　हृदय से गया हृदय का मान,
रहा जब नहीं युद्ध का चाव ! १७२

तुम्हीं बोलो फिर क्या कर्तव्य,
हमारा है मन्त्री ! इस काल ?
चली है यवनों ने भी चाल,
चढ़े ऊँचे उनके मन्तव्य !! १७६

ठहर जाओ, मैं देकर ध्यान,
ख़ूब सोचूँगी अब यह बात
जाग कर सारी लम्बी रात
करूँगी चिन्ता का अवसान १८०

स्वयं तुम भी जाकर इस काल,
शान्ति की करो घोषणा आज,
सावधानी से हो सब काज
कहूँ जो, उसे करो तत्काल १८४

अभी जाती हूँ शयनागार—
सोचने, ले ईश्वर का नाम,
सदा शुभ ही होगा परिणाम,
करो राणा का जय-जयकार !" १८८

———

नवम सर्ग

निशा का होता था अवसान,
लालिमा फैली प्राची-ओर,
उजेले की आ गई हिलोर,
हो गए रजनी-पति भी म्लान ४

हो रहे थे क्षण-क्षण निस्तेज,
बन गए हों मानों कर्पूर,
हो गई थी द्युति उनसे दूर,
बने थे श्वेताङ्गी अङ्गरेज़ ८

चन्द्र की समता भी उस समय,
कर रहा था करुणा का तन,
नेत्र का था भू ओर पतन,
हृदय में था विचार-सञ्चय १२

छोड़ कर बार-बार उच्छ्वास,
सोचती थीं वे मन ही मन,
लोचनों में था अवगुण्ठन,
किन्तु था भ्रू का विषम विलास १६

पड़ गए थे भौंहों पर बल,
अधर-पुट में भी थी फड़कन,
विविध भावों का था मिश्रण,
न छिन भी पड़ती थी कुछ कल, २०

सोच कर लिखा पत्र फिर एक,
बड़ी ही अस्थिरता के साथ,
स्वेद से सज्जित था मृदु माथ
किन्तु अस्थिर मन था सविवेक २४

कभी मुख पर आता था क्रोध,
कभी आँखों में करुणा-भाव,
कभी लोचन में आँसू-स्राव,
कभी वाणी का था अवरोध ! २८

कभी आशा का क्षीण प्रकाश—
लोचनों को करता उज्ज्वल,
निराशा होती कभी प्रबल,
म्लान हो जाता वदन स-हास ३२

इस तरह भाँति-भाँति के भाव,
वदन-पट पर होते अङ्कित,
कभी सोल्लास, कभी शङ्कित,
कभी नैराश्य-भाव के हाव ३६

भाव-रङ्गों का था मिश्रण,
हृदय-नभ में खिंचता सुर-चाप,
किया मन ही मन करुण-प्रलाप,
क्रोध-करुणा का था यह रण ४०

बुलाया राजदूत फिर एक,
कहा अपना ऊँचा कर घोष,
स्मरण कर मृदु शब्दों का कोष,
प्रेम से रँगा वाक्य प्रत्येक ४४

"शीघ्र ही दिल्ली-पति के पास,
अभी जाकर तुम करो प्रणाम,
वहाँ लेकर तुम मेरा नाम,
कहो निज मातृ-भूमि का त्रास ४८

और तुम दे देना यह पत्र,
हुमायूँ शहन्शाह को दूत!
बहादुर की सारी करतूत।
सुना देना निर्भय सर्वत्र ५२

उदयसिंह का लेना तुम नाम,
और कहना वह है असहाय,
अगर जाओगे वहाँ न हाय!
मृत्यु-दायक होगा परिणाम!! ५६

इस तरह रक्षा का ले वचन,
बाँधना यह रक्षा-बन्धन,
'भगिनि-प्रेषित यह प्यारा धन'
बाँधना इससे उनका मन ६०

इस तरह जाना तुम दरबार,
प्रेम-रक्षा का लो वरदान,
लौटना लेकर रक्षा-दान,
हर्ष-आँसू का ले दृग-भार ६४

शीघ्र जाओ, तुम दूत! सवेग,
न लेना पथ में तनिक विराम,
शीघ्र कर अपना पूरा काम,
हृदय में भरा रहे आवेश ६८

मातृ-भू की कर जय-गुञ्जार,
जल्द आओ तुम प्यारे वीर!
तुम्हारा रक्षित रहे शरीर—
करो 'हर' 'हर' का जय-जयकार!" ७२

दूत ने सादर किया प्रणाम,
झुकाया श्रीचरणों में माथ,
चला फिर वह गौरव के साथ,
हृदय में ले ईश्वर का नाम ७६

दशम सर्ग

मची थी अति अशान्ति सब ओर,
गूँजता था सब हिन्दुस्थान,
हुआ राज्यों का था अवसान,
हो रहा था भीषण रण घोर ४

कभी बलवाई करते राज्य,
शान्तिमय स्थान बने वीरान,
रानियों का होता अपमान,
नष्ट होता उनका साम्राज्य ८

कहीं सिशु का होता प्राणान्त,
कहीं होता था नारी-हरण,
कहीं था राजाओं का मरण,
गूँज जाती विदिशाएँ शान्त १२

बही था कहीं रक्त की धार,
मेदिनी धुलती बारम्बार,
दीन-दुखियों की करुण पुकार
गूँजती, करती वायु-विहार १६

उस समय शाह हुमायूँ मुग़ल
और दुर्धर्ष केसरीशाह,*
न कर कुछ राज्यों का परवाह,
लड़ रहे थे, जतला निज बल २०

रणस्थल था दल का बङ्गाल,
कभी—"बक्सर" में होता युद्ध,
हो रहे थे दोनों दल क्रुद्ध
रक्त से रञ्जित थी भू लाल २४

किन्तु थी शेरशाह में शक्ति,
हमेशा चलता था वह चाल,
न उसका होता बाँका बाल,
शौर्य में उसकी थी अनुरक्ति २८

*शेरशाह

छिड़ा था जब भारी संग्राम,
हुमायूँ था दुख से अभिभूत,
तभी चित्तौड़-प्रान्त का दूत,
वहाँ पहुँचा, कर नम्र प्रणाम ३२

हुमायूँ ने देखा वर-वेश,
अहा ! यह राजपूत है वीर,
हो उठा तत्क्षण बहुत अधीर,
हो गए स्वेद-सिक्त सब केश ! ३६

जहाँ है यवन-सैन्य का दल,
जहाँ हिन्दू न दीखता एक,
प्रेम से करने को अभिषेक
किस तरह आया आर्य-प्रबल ४०

इस तरह यवन हुमायूँ शाह,
हो रहे थे उसको लख चकित
बन रहे थे वे चञ्चल-चित
हुई मन में भाषण की चाह ४४

कह उठे, ऐ हिन्दू वरवीर
कहाँ से लाते हैं तशरीफ़,
आपकी कुछ सुन लूँ तारीफ़,
पुरअसर थोड़ी सी तक़रीर ४८

कहाँ से लाए हैं फ़रमान
जल्द बतलावें अपना नाम
और मुझसे क्या है कुछ काम ?
आपके मन के क्या अरमान ? ५२

देख कर यह प्यारी पोशाक
हो रहे ज़िन्दः-दिल मालूम,
करें मुझको न आप महरूम—
हाल से अपने, ऐ दिल-पाक ! ५६

हुमायूँ की यह सुन कर बात,
वीर हिन्दू ने किया सलाम,
और लेकर फिर अपना नाम,
लिया चित्तौड़ नाम विख्यात ६०

"शहन्शाहे ऐ हिन्दुस्थान !
आपकी होती रहे विजय,
शत्रु से रहे न किञ्चित् भय
आपका बढ़ता जावे मान ६४

आज मैं यहाँ आपके पास,
शीघ्र आया कुछ करने काम
महारानी करुणा का नाम—
सुना होगा चित्तौड़-निवास ६८

उन्हीं का लाया हूँ सन्देश,
सुन उसको अब देकर ध्यान,
महारानी का कर सम्मान
बचावें उनका प्यारा देश ७२

हो रहे हैं अब उनको कष्ट,
उठ रही है उनके मन दाह,
हाय ! वह यवन बहादुरशाह
कर रहा राज्य पूर्णतः नष्ट ७६

न है कोई भी अब रक्षक,
सैन्य है छोटी-सी परिमित,
शौर्य से यद्यपि हैं परिचित,
लड़ेंगे किन्तु वीर कब तक ? ८०

इसी से भेजा है यह पत्र
महारानी ने दुख के साथ,
हो रही हैं वे हाय ! अनाथ,
शोक ही है उनको सर्वत्र ८४

और यह भेजा है उपहार,
इसे कर लें सप्रेम स्वीकार,
पत्र पर सत्वर करें विचार,
और लें उनको शीघ्र उबार ८८

सुनाया करुण कथन स-विनीत,
पत्र दे शीघ्र झुकाया माथ,
बड़ी सम्मान-दृष्टि के साथ,
राज्य-वैभव से बना सभीत ९२

हुमायूँ ने ले पत्र स-चाह,
दे दिया निज मन्त्री के हाथ,
कहा—"तुम पढ़ो ग़ौर के साथ,
मुझे हैरत होती है ग़ाह ९६

❦

ख़ुशी मैंने की है हासिल,
मिला मुझको रानी का ख़त,
मिली गोया है यह दौलत,
शान से उछल रहा है दिल, १००

❦

अगर माँगी है मुझसे मदद,
अभी होता हूँ मैं तैयार,
करूँगा उस पर जान निसार,
शेर से जङ्ग करूँगा रद १०४

❦

चाहता मैं सुनना तक़रीर,
महारानी के ऐ दीवान !
दिखा दें हम भी हैं इन्सान,
खुल गई मेरी है तक़दीर !" १०८

❦

समाई तारों में है कान्ति,
वहीं पर वे करते हैं वास,
स्वयं हँस, मुझको बना उदास,
भङ्ग करते हैं मेरी शान्ति १४४

कभी बन जाती हूँ पागल,
कभी उठता है विषम विषाद,
सदा रहती है उनकी याद,
अश्रु बहते रहते प्रतिपल १४८

पर न आए वे मेरे पास,
देख कर यह दुर्दशा अतीव,
झुकी रहती है मेरी ग्रीव
निरन्तर उठता है उच्छ्वास! १५२

कभी उठती आशा की कोर,
मातृ-भू-रज जब लेती चूम,
शत्रु जब जीतेंगे यह भूमि,
रजज हो आवेंगे इस ओर! १५६

बनी हूँ मैं सब भाँति विकल,
काँप उठता तन बारम्बार,
किस तरह देखूँगी इस बार,
भूमि पर रिपु का छल या बल ? १६०

सम्हालो तुम आकर इस बार,
डूबती मेरी नौका हाय !
करो रक्षा का कुछ सदुपाय,
बुलाती भगिनी बारम्बार ! १६४

तुम्हारा भगिनी-सुत है बाल,
उसे कैसे हो रण का ज्ञान ?
अभी तो है वह शिशु अनजान,
युद्ध का क्या जाने वह हाल ? १६८

शीघ्र रक्षा का करो विचार,
घिर रहा है अब राज्य-निकेत,
अभी आओ निज सैन्य समेत,
अन्यथा होगी मेरी [illegible] १७२

समाई तारों में है कान्ति,
वहीं पर वे करते हैं वास,
स्वयं हँस, मुझको बना उदास,
भङ्ग करते हैं मेरी शान्ति १४४

कभी बन जाती हूँ पागल,
कभी उठता है विषम विषाद,
सदा रहती है उनकी याद,
अश्रु बहते रहते प्रतिपल १४८

पर न आए वे मेरे पास,
देख कर यह दुर्दशा अतीव,
झुकी रहती है मेरी ग्रीव
निरन्तर उठता है उच्छ्वास! १५२

कभी उठती आशा की कोर,
मातृ-भू-रज जब लेती चूम,
शत्रु जब जीतेंगे यह भूमि,
रजज हो आवेंगे इस ओर! १५६

बनी हूँ मैं सब भाँति विकल,
काँप उठता तन बारम्बार,
किस तरह देखूँगी इस बार,
भूमि पर रिपु का छल या बल ? १६०

卐

सम्हालो तुम आकर इस बार,
डूबती मेरी नौका हाय !
करो रक्षा का कुछ सदुपाय,
बुलाती भगिनी बारम्बार ! १६४

卐

तुम्हारा भगिनी-सुत है बाल,
उसे कैसे हो रण का ज्ञान ?
अभी तो है वह शिशु अनजान,
युद्ध का क्या जाने वह हाल ? १६८

卐

शीघ्र रक्षा का करो विचार,
घिर रहा है अब राज्य-निकेत,
अभी आओ निज सैन्य समेत,
अन्यथा होगी मेरी हार १७२

卐

एक दुखिनी का कर दुख दूर,
उसे दो सुख की अब सम्पत्ति,
दूर कर उसकी सब आपत्ति,
अन्न उसको कर दो भरपूर १७६

❦

यही है मेरा आशिर्वाद,
करो रिपु-सेना का तुम नाश,
गुँजा जय-ध्वनि से सब आकाश,
हटा दो रिपु का रण-उन्माद १८०

❦

जीत कर जब आओगे भवन,
तुम्हारी बहिन सजा कर थाल,
भ्रातृ-उर देगी माला डाल,
बहिन-भाई का होगा मिलन १८४

❦

विजय हूँ मना रही निशि-दिन,
तुम्हारा यश हो...
कर रही हूँ अ...
तुम्हारी प्यारी—करु...

❦

हुमायूँ ने (सुन कर यह पत्र,)
खींच कर गौरव से निश्वास,
बुलाई बहुत शीघ्र ही पास,
सैन्य जो फैली थी सर्वत्र १९२

खींच भृकुटी, ऊँचा कर हाथ,
शीघ्र विस्फारित कर लोचन,
'इलाही' कह कर मन ही मन,
कहा फिर बड़े जोश के साथ १९६

"अरे मेरे सिपाहियो ! आज,
फ़तहयाबी करना हासिल
न होना मौक़े पर बुज़दिल
यही तो लेना है अन्दाज़ २००

अगर हुब्बे-वतनी रजपूत,
चाहते आज हमारी मदद,
मदद देने की कर दो हद
दिलेरी का दो ख़ूब सुबूत २०४

दिलों में रक्खो इतमीनान,
तवारीख़ों में होगा नाम,
न बन सकते हो कभी ग़ुलाम
रहेगा बाक़ी नाम-निशान २०८

✿

दिखा सच्ची बहादुरी आज,
उदू को कर दो बिलकुल पस्त
करोगे हासिल तुम्हीं बिहिश्त,
और दुनिया में पाओ राज ! २१२

✿

न समझो अपनी जान अज़ीज़
बढ़ो ख़ुश हो मैदाने-जङ्ग
देख कर सब हो जावें दङ्ग,
समझना तुम सबको नाचीज़ २१६

✿

अदा करना है अपना हक़
फ़ौज यह हो तमाम मुस्तैद,
न होवे किसी बात की क़ैद,
जङ्ग को बख़्शो अब रौनक़ २२०

✿

तवक्कुफ़ करना लहज़ः एक,
मुनासिब है न हमें इस वक्त,
न हो कोई भी दिले-शिकस्त,
दिलेरी में दिलेर हों नेक ८२४

हटा कर शेरशाह से जङ्ग,
मुख़ातिब हो चित्तौड़ तरफ़
सुलह के लिख दो उसको हरुफ़
यही होने दो अपना ढङ्ग २२८

यही है अज़माइश का काम,
अदा कर देना अपना नमक,
नहीं है अपना आज तलक,
बुज़दिले-फ़िहरिस्तों में नाम २३२

न समझो तुम अपना आराम,
दिलेरो ! अब बमुक़ाबिल जङ्ग,
रहे ख़ञ्जर पर ख़ूँ का रङ्ग
यही तो मेरा है अञ्जाम २३६

निहायत दिली ख़ुशी की ख़बर,
　　आज सुनता हूँ अपने कान,
　　न ऐशो-इशरत के सामान,
रहें अब अपने बिस्तर पर　२४०

※

कुव्वते-बाज़ू से चौकन,
　　उदू को कर देंगे पामाल,
　　सल्तनत पर आए न ज़वाल,
लहू से रँग लेंगे दामन　२४४

※

नहीं हैं हम आराम-तलब,
　　लड़ेंगे हम बज़ोर शमशीर,
　　सुन चुके बहुत-बहुत तक़रीर,
जङ्ग से होगी राहत अब !　२४८

※

गुलबदन की ख़्वाहिश को छोड़,
　　करो अब ख़ौफ़नाक तुम जङ्ग,
　　बहादुर भी हो तुमसे तङ्ग,
जङ्ग से ले अपना मुँह मोड़ !　२५२

※

ख़शनुमा मुल्क बना जङ्गल,
लड़ेगा अगर बहादुरशाह,
न कर इसकी कुछ भी परवाह,
नेकनामी करना हासिल ! २५९

नहीं सह सकते हैं हम आह !
बने बुज़दिल इतनी जुरअत,
करो हासिल लड़ कर राहत,
यही कहता है शाहन्शाह !" २६०

एकादश सर्ग

हो गया था सन्ध्या का काल
सूर्य ने पश्चिम किया प्रयाण
दिशा-देवी ने कर निर्माण—
लाल रँग, फेंकी अरुण गुलाल ४

गया रञ्जित रँग से गगन,
फूल फूले थे मानो लाल
तोड़ने आई रजनी-बाल
साथ ले ताराओं के गण। ८

दिशा पश्चिम में नभ सर्वत्र
विविध रङ्गों से था रञ्जित
मातु ने होकर मानो मुदित
बाल को पहिनाए थे वस्त्र १२

किरण-माला का गुम्फित जाल,
अरुण-मुख-रवि ने खींचा मुदित
उसी क्षण फँस कर उसमें त्वरित
निकल आया ऊपर शशि-बाल १६

क्योंकि थी शशि की पैनी धार,
कट गया रवि का सारा जाल,
दिया पश्चिम कोने में डाल,
तारिकाओं ने कर अभिसार २०

खेलता पहुँचा वह सविनोद,
बढ़ा कर अपने कर अस्पष्ट
रजनि-तम-वैभव को कर नष्ट
समुद बैठा वह नभ की गोद २४

उसी क्षण राज-महल में उदित,
दूसरा था मयङ्क-मुख विमल
किन्तु था यह दुख से अति विकल
और नभ-शशि था मन में मुदित २८

बढ़े जलधर दोनों की ओर,
एक ने जलद किया उज्ज्वल,
अन्य को घन ने कर धूमिल!
मलिन कर दी उसकी नव-कोर, ३२

देवि करुणा कर दृग अनिमेष,
देखती थी वन-पथ की ओर,
नेत्र को देती थी झकझोर,
उष्ण-निश्वास प्रभञ्जन-वेष ३६

निकल जाते मुख से अस्पष्ट,
शब्द कुछ ओष्ठ-द्वार को खोल,
निकटवर्ती समीर में डोल,
गूँज कर हो जाते थे नष्ट। ४०

भाव-लहरी का आन्दोलन,
हो रहा था मुख पर अविराम,
कभी ले शाह हुमायूँ नाम,
देखती पथ को उत्सुक बन ४४

निराशा-आशा का यह रण,
हर्ष-चिन्ता का था मिश्रण,
उमँगता-दबता मन प्रतिक्षण,
खेलता दृग में आँसू-कण। ४८

सोचती थी वह बन स-विषाद,
हुमायूँ आते हों इस काल,
सँदेशा पाते ही तत्काल,
उठे होंगे कर मेरी याद ५२

एक हीनावस्था में पतित,
नारि को करने को रक्षण,
बन्द कर शेरशाह से रण
छोड़ कर उसको अब तक अजित ५६

सैन्य के सहित यहाँ प्रस्थान,
शीघ्र ही करते हों इस काल,
जान कर मेरा दुखमय हाल
चले होंगे स-सैन्य सुख-मान ६०

किन्तु वे अब तक आए हैं न,
सदा वे रहते हैं स्वच्छन्द,
कहीं शोकाश्रु-विन्दु से मन्द,
देखते हों न स्पष्ट ये नैन! ६४

विश्वजननी! करती हूँ विनय,
मार्ग में उन्हें विघ्न अब हों न,
अन्यथा रक्षक होगा कौन?
जब कि रिपुओं का है यह भय! ६८

मार्ग में जितने होंवे शूल,
उन्हें हो जावें कोमल फूल,
मृत्तिका हो सुरसरि की धूल,
पुण्यदायक वन जावे भूल ७२

अगर मैं आज हुई असहाय,
क्या न रक्षक हैं प्रभु के हाथ?
देख कर मुझे मलीन अनाथ!
करेंगे मङ्गलमय सदुपाय ७६

भाग्य ही दीख रहा प्रतिकूल,
सहायक-रूप है अनुपस्थित,
हो रहा हृदय दुराशा-सहित,
उड़ेगी क्या स्वधर्म की धूल ? ८०

सुन रही समाचार यह आज,
आ रहा बढ़ा बहादुरशाह,
छीन लेगा वह हमसे आह !
हमारा सुन्दर नारि-समाज ! ८४

हमारी ललित लजीली सरल,
नारियों का जब होगा हरण !
भला, किसकी लेंगी हम शरण ?
यवन का बहु-संख्यक है दल ! ८८

परम सुन्दर छविमय सुकुमार,
रूप का ही है जिन पर भार,
देख कर उन पर अत्याचार,
क्यों न ये दृग फूटें सौ बार ? ९२

कहाँ ललना का गोरा गात,
और उसका विकसित मृदु वदन,
कहाँ काला वह निष्ठुर यवन,
कहाँ तम और कहाँ प्रिय प्रात ? ९६

कहाँ नवनीत-समान शरीर,
कहाँ कारिख-सा काला रङ्ग ?
कहाँ तुर्की-टोपी का ढङ्ग !
और है कहाँ मनोहर चीर ? १००

न होने दूँगी यह मिश्रण,
न छू पावे ललना को यवन,
लूट ले जावे सारा भवन,
पर न टूटेगा मेरा प्रण १०४

महल को कर दे खण्डहर आज,
धेनु, गज, घोड़े ले वह लूट,
कोष भी मुझसे जावे छूट,
किन्तु रक्षित हो नारि-समाज १०८

छीन कर मुझसे सब चित्तौर,
करे वह शीघ्र हज़ारों यत्न,
किन्तु उड़ जावेगा पिक-रत्न,
भले ही ले वह सारा बौर ११२

रहेगा रत्न-सतीत्व अम्लान,
रत्न-ढेरों का कर ले चयन,
घुसेगा जब वह भीतर भवन,
देख लेगा ललना-बलिदान ! ११६

लखेगा स्वाभिमान का मान,
उच्च पातिव्रत का उत्कर्ष,
मान पर मरने का आदर्श,
हमारे कर्तव्यों का ज्ञान ! १२०

नारियों का हठ-अभ्युत्थान,
धर्म-प्रियता का व्रत प्रोज्ज्वल,
क्षीण-कटि का यह अनुपम बल,
मृत्यु का सादर प्रेमाह्वान १२४

यवन-वैभव का अति अपमान,
आर्य-दृढ़ता का पूर्ण प्रमाण,
स्वयं अपनी लज्जा का त्राण,
और स्वच्छन्द-भाव का गान ! १२८

आर्य-गौरव का गुणमय ग्रथन,
रिपु-विगर्हण का कुत्सित भाव,
और आर्यों का अमित प्रभाव,
देख लेगा वह विजित यवन ! १३२

सदा गूँजेगा मेरा शाप ;
इन्हीं नीरव-भवनों में घूम,
अग्नि-लपटों से उठता धूम,
रुलाएगा रिपु को चुपचाप १३६

अरे, देखो ! उत्तर की ओर,
उठ रहा किस सेना का घोष,
हुमायूँ सेना-सहित, सरोष,
आ रहा रण करने क्या घोर ? १४०

अरे, पर यह क्या है व्यापार,
हुमायूँ-दल न दीखता आह!
आ रहा चढ़ा बहादुरशाह—
उसी का उठती यह ललकार १६०

बहादुरशाह आ गया पास,
किन्तु दिखता न हुमायूँ-दल
प्रभो! यह मुझसे कैसा छल!
शुभाशा में क्यों है उच्छ्वास? १६४

सभी आशाएँ होकर नष्ट,
हो रही हैं मानों कर्पूर,
हुमायूँ-सेना है क्या दूर?
उसे आने में है क्या कष्ट? १६८

सभी उल्लसित हृदय के भाव,
क्षणिक बुदबुद का लेकर रूप,
नष्ट होते उसके अनुरूप,
अरे, यह कैसा क्षणिक स्वभाव! १७२

भला कैसे रक्षा हो हाय !
हो रहे हैं हम सब असहाय !
हो सकेगा अब कौन उपाय !
न्यून है राजपूत-समुदाय ! १७६

हमारी होगी निश्चय हार,
हुआ सौभाग्य-चिन्ह का लोप
दैव का दीख रहा है कोप,
न होगा अब चितौड़ोद्धार !! १८०

सहायक नहीं ईश अतिरिक्त,
वीर चित्तौड़-भूमि का आज,
डूब जावेगा नाम-जहाज,
रक्त से होगी भू अभिषिक्त १८४

सजेगा फिर से ही एक बार,
यहाँ "जौहर" का सारा साज,
उसी में जल कर नारि-समाज,
लपट-कर से देगा ललकार ! १८८

वीर-रस से होकर उद्धत,
भरा था हृदयों में आवेश,
सामने ही था जो यवनेश,
मारने उसको थे उद्यत १६

❦

चाहते सुनना आज्ञा-नाद,
और डङ्के की बस आवाज़,
झपटने को थे जैसे बाज़,
हो गया था रण का उन्माद ! २०

❦

इधर सज्जित था रण का ढङ्ग
दूसरा था महलों का हाल,
उठी थी उधर चिता की ज्वाल,
रानियों के सज्जित थे अङ्ग ! २४

❦

भाल पर था नव केसर लेप,
केश में गुथे हुए थे सुमन,
अङ्ग पर थे मङ्गलमय वसन,
दैव पर सबका था आक्षेप, २८

❦

बालिकाओं का जननि-समेत,
लाल चन्दन से बारम्बार,
और पहिना फूलों के हार,
हो रहा था अनुपम अभिषेक ! ३२

कहीं मङ्गल ध्वनिमय था गान,
मधुर स्वर का था मृदु आरोह,
छूट गया था जीवन का मोह,
हो रहा अन्तिम विमल विधान ३६

सज रहे थे मङ्गलमय थाल
नारियाँ गूँथ रही थीं हार,
उठ रही थी ध्वनि जय-जयकार,
विहँस उठतीं कन्याएँ-बाल ! ४०

जब कभी उनके कर कोमल,
बनाते हार पुष्प, कर चयन,
गूँथते हैं सुमनों को सुमन,
यही भ्रम होता था प्रतिपल ४४

वीर-रस से होकर उद्धत,
भरा था हृदयों में आवेश,
सामने ही था जो यवनेश,
मारने उसको थे उद्यत १६

चाहते सुनना आज्ञा-नाद,
और डङ्के की बस आवाज़,
झपटने को थे जैसे बाज,
हो गया था रण का उन्माद ! २०

इधर सज्जित था रण का ढङ्ग
दूसरा था महलों का हाल,
उठी थी उधर चिता की ज्वाल,
रानियों के सज्जित थे अङ्ग ! २४

भाल पर था नव केसर लेप,
केश में गुथे हुए थे सुमन,
अङ्ग पर थे मङ्गलमय वसन,
दैव पर सबका था आक्षेप, २८

बालिकाओं का जननि-समेत,
लाल चन्दन से बारम्बार,
और पहिना फूलों के हार,
हो रहा था अनुपम अभिषेक! ३२

कहीं मङ्गल ध्वनिमय था गान,
मधुर स्वर का था मृदु आरोह,
टूट गया था जीवन का मोह,
हो रहा अन्तिम विमल विधान ३६

सज रहे थे मङ्गलमय थाल
नारियाँ गूँथ रही थीं हार,
उठ रही थी ध्वनि जय-जयकार,
विहँस उठतीं कन्याएँ-बाल! ४०

जब कभी उनके कर कोमल,
बनाते हार पुष्प, कर चयन,
गूँथते हैं सुमनों को सुमन,
यही भ्रम होता था प्रतिपल ४४

मन्द गति से इस भाँति समोद,
शीघ्र मन्दिर पहुँचा रनिवास,
गुँजा जय-ध्वनि से सब आकाश,
हुआ एकत्रित वह सविनोद ८०

महा श्रीदुर्गा देवि समीप,
महारानी करुणा ने हाथ
जोड़ कर बड़े प्रेम के साथ,
जलाया कर्पूरों का दीप ८४

किया फिर आदर से पूजन
आरती की श्रद्धा के साथ,
झुकाया बड़े प्रेम से माथ,
कहा फिर होकर प्रमुदित मन ८८

"देवि! यह है अन्तिम पूजन,
क्षमा करना सबकी सब भूल,
रहें सब पर सदैव अनुकूल,
न करना हमसे निष्ठुरपन ९२

धर्म-हित होता सबका मरण,
सभी "जौहर" को हैं तैयार,
हृदय में कुत्सित हैं न विचार,
तुम्हारे ही, मन में हैं चरण ९६

नहीं है भाव हृदय में और,
रही केवल इतनी ही चाह,
अन्त में हम सब मिल कर आह !
सुरक्षित कर न सकीं चित्तौर !! १००

मानती हैं पातिव्रत-धर्म,
इसी से है न मृत्यु का भय,
अगर यवनों की रही विजय,
न कर पावेगा वह दुष्कर्म १०४

देवि ! अब तक होकर अनुकूल,
कृपा की है जो तुमने सदय,
उसी से हुआ हमारा उदय,
फूल थे जो दिखते थे शूल १०८

आज हम करतीं स्वर्ग-प्रयाण,
चिता-ज्वाला पर चढ़ सविनोद,
मातृ-भू की रक्षित हो गोद,
उसी का हो सदैव कल्याण ११२

शत्रु से बचने के हित सजनि !
ज्वाल की माल करें धारण,
मूल तो हम ही हैं कारण,
शत्रु के धावे का हे जननि ! ११६

इसी से यदि सबका प्राणान्त,
शीघ्र ही हो जावे इस काल,
न डस पावेगा वह रिपु-व्याल
शीघ्र हो जावेगा वह शान्त १२०

इसी से हे जननी ! यह विनय,
जनाती हैं सब जोड़े हाथ
न करना यह चित्तौड़ अनाथ,
उदित ही रहे हमारा 'उदय' १२४

तुम्हारे क्रोधानल में लीन,
न होने पावे वह वरवीर,
हाथ में ले असि, हो रणधीर,
मातृ-भू सिंहासन-आसीन १२८

हमारी बलि का वह परिशोध
यवन से ले-लेकर संग्राम,
हाय ! पति का वह रख ले नाम,
उसे हो अपने ऋण का बोध ! १३२

तुम्हारी कृपा-कोर अनुकूल,
करे उसकी विघ्नों से आड़,
शीघ्र कर दे स्वतन्त्र मेवाड़
हाथ में लेकर वह शर-शूल ! १३६

शत्रु अब आया बहुत समीप,
हमारे वीर गए मैदान,
उदयसिंह को देना वरदान,
रहे रक्षित वह वंश-प्रदीप १४०

चाहतीं हम आज्ञा इस काल,
आपके चरणों की ले धूल,
न छूने पावे यवन दुकूल,
और छू लें हम ज्वालामाल १४४

चाहती हैं न जननि! हम और;
आपके श्रीचरणों को चूम
पुनः मर कर आवें इस भूमि
और फिर से पावें चित्तौर १४८

तुम्हारी जय का हो गुञ्जार,
और हो 'हर' 'हर' 'हर' का नाद,
हृदय में भरा रहे आह्लाद
मातृ-भू का हो जय-जयकार!" १५२

पुष्प-वर्षा हो गई स-चैन,
रानियों ने गा मङ्गल-गान,
चिता की ओर किया प्रस्थान,
मन्द गति से नीचे कर नैन १५६

मातृ-भू का कर मन में ध्यान,
हृदय में कर भावों की सृष्टि,
चिता को ओर उठा कर दृष्टि,
किया फिर धीरे से प्रस्थान १६०

कुछ समय ही में वे सोल्लास,
मधुर वाणी से गाकर गान,
हृदय में पतियों का कर ध्यान,
आ गईं सभी चिता के पास १६४

चिता का रौद्र वेष भीषण !
नारि-अङ्गों का कर उपहास,
कर रहा मानों अट्टाहास,
भभक उठता था वह प्रतिक्षण ! १६८

यहाँ से वहाँ पलट कर लपट,
छोड़ती थी काला-सा धूम
मलय-काष्ठों के बीचों घूम
शीघ्र हो जाती छिप कर प्रकट १७२

काल की जीभों के सम लपक,
लपट उठती थी चारों ओर,
वायु जब देता था झकझोर,
शब्द 'धू'-'धू' कर जाती धधक १७६

अग्नि का यही भयानक वेश,
धूम-युत था करुणा-उपमान,
क्योंकि वे धार अरुण परिधान,
खोलती थीं हाथों से केश १८०

पहिन करुणा ने अरुण दुकूल,
चिता में फेंके सुन्दर सुमन,
दिवाकर भी ऊँचे उठ गगन
फकते अरुण-करों के फूल १८४

रश्मियों से मिश्रित था धूम,
मनोहर शोभा थी सुखमय,
अग्नि-स्वाहा के कच समुदय,
रहे हैं कुवलय मानों चूम १८८

चिता में पड़ा रश्मि का दल,
मौन कहता था वह सम्भ्रम,
तुम्हारे बदले गिर कर हम,
चिता ही में जावेंगे जल ! १९२

चिता का अविदित अविरत गान,
गुँजाता था सब राज्य-निकेत,
चिता भी मानों प्रेम समेत,
लपट-कर से करती आह्वान ! १९६

देवि करुणा ने दे आदेश,
बुलाया ललनाओं का दल,
कहा सबसे होकर अविचल,
दिया कर्तव्यों का उपदेश ! २००

"सजनि ! अब आया है वह समय,
जब कि हम दें अपना परिचय,
वीर क्षत्राणी बन निर्भय,
करें जग में निज धर्मोदय ! २०४

अग्नि की लपटों ही के साथ,
बैठ कर चारु चिता की गोद,
पहुँच जावें हम सजनि ! समोद,
जहाँ होंगे निज प्यारे नाथ !" २४०

बुलाया शीघ्र उदयसिंह पास,
और उसको देकर अशीष,
सूँघ कर उसका सुन्दर शीश,
लिया चुम्बन सविनोद सहास २४४

अलक कर से सँवारते समुद,
प्रेम से बोली "प्यारे उदय !
समय पर तेरा हो शुभ उदय,
बने कमनीय इन्दु-कुल-कुमुद !, २४८

जानता तू है अपना कर्म,
इस समय क्या करना है योग्य,
भाग्य में जो होता है भोग्य,
भोगना उसको ही है धर्म २५२

यवन ने छेड़ा है जो रण,
उसी का करने को प्रतिकार
गए हैं राजपूत-सरदार,
हमारी रक्षा के कारण २५६

✿

जानता है तू, अपनी जीत—
आज होने में है सन्देह,
धर्म से हम सबका है स्नेह,
उसी के गाती हैं हम गीत २६०

✿

इसी हित चिता हुई तैयार,
उसी में हम सब हों बलिदान,
न यवनों से हो कुछ अपमान,
इसी से मरने से है प्यार २६४

✿

किन्तु तुम जाओ बूँदी आज,
वहाँ अपने मामा के पास,
बड़े होने तक करना वास,
अन्त में रखना मेरी लाज २६८

✿

यवन से बदला लेना लाल !
इसी बलिदान-चिता का वीर,
आज जो जलता है यह चीर,
जलाना रिपु की टोपी लाल २७२

शान्ति से सदा बिताना काल,
कभी कर हम सब की तुम याद
स्मरण कर मेरा आशिर्वाद,
बुलाना शीघ्र यवन का काल २७६

देर अब होती है प्रिय बाल !
मुझे चुम्बन दो फिर एक और,
बचाना पुत्र ! पुनः चित्तौर
यही मेरी आज्ञा इस काल !! २८०

हृदय से लग जाओ फिर लाल !
प्रेम से लो यह आशिर्वाद,
कभी कर अपनी माँ की याद,
प्रेम के आँसू देना डाल"... २८४

हुआ कर्तव्य-प्रेम का द्वन्द,
पक लेकर सुत का चुम्बन,
और अन्तिम कर आलिङ्गन,
कर लिए करुणा ने दृग बन्द, २८८

※

उदयसिंह ने गह कर अञ्चल,
कहा, "मुजको बी दो तलवाल,
अबी ललता ऊँ दे ललकाल,
आल्य का मुज में बी ए बल २९२

※

अगल मुजको छोता-छा जान,
न कलने दोगी लन का काज,
जला दो मुजे चिता में आज,
कबी जाऊँगा बूँदी मा ! न... २९६

※

छुनी जब ले 'हल' 'हल' का नाम,
कल लए अपना जनम छनाथ
क्यों न मैं बी अब छुख के छाथ,
आ छकूँ मात्ल-बूमि के काम ? ३००

※

मुजे बी दे दो आछिज़्वाद,
औल इक छोती छी तलवाल
न जानो मुजको छोता बाल,
चलाना धनुछ मुझे प याद" ३०४

शीघ्र दे चुम्बन का उपहार,
कहा करुणा ने—मेरे लाल !
अगर तुम जल जाओ इस काल,
करेगा कौन भूमि-उद्धार ? ३०८

तुम्हारे हाथ भूमि की लाज,
तुम्हीं को करना है उद्धार,
तुम्हीं पर है लज्जा का भार,
करोगे तुम्हीं भूमि पर राज ३१२

चिता का लेना है परिशोध,
यवन से बदला लेगा कौन ?
इसीसे होकर प्यारे ! मौन,
इस समय करो न मन में क्रोध ! ३१६

शीघ्र ही बूँदी जाओ लाल,
वहाँ रहना तुम सुख के साथ
भूमि को करना शीघ्र सनाथ
मुकुट से सजे तुम्हारा भाल !! ३२०

卐

इस तरह दे सप्रेम आशीष
सेवकों को देकर आदेश
"उदय" को दे समुचित उपदेश,
सजाया पुष्प-हार से शीश ! ३२४

卐

अश्रु-पूरित नेत्रों से उदय,
सेवकों सहित गया चुपचाप,
किया मन ही मन करुण-विलाप,
देवि करुणा ने होकर सदय ! ३२८

卐

किन्तु फिर हुआ धर्म का ध्यान,
आगया पुनः हृदय आवेश,
स्मरण कर फिर अपने हृदयेश,
हुई प्रस्तुत देने बलिदान ३३२

卐

आगईं सभी चिता के पास,
उछाले गए सुगन्धित सुमन
प्रेम से किया देवि को नमन
आरती की सबने सविलास ३३६

खोल कर अपने कुञ्चित केश,
चिता में मालाएँ दी डाल,
किया फिर केसर-सज्जित भाल,
बनाया मङ्गलमय सब वेश ,, ३४०

प्रेम से की प्रदक्षिणा और,
चिता-पूजन करके सविधान,
किया कल-कण्ठों से जयगान,
और पूजा प्यारा चित्तौर! ३४४

उठी करुणा की एक हिलोर,
किया दुर्गा को पुनः प्रणाम
प्राणपति का ले मन में नाम
देख कर पुण्य-भूमि की ओर! ३४८

मिलाया लपट करों से हाथ,
चिता के अङ्क हुई आसीन,
पहिन लपटों का वस्त्र नवीन,
हुई सज्जित स्वाहा के साथ ३५२

पूर्व में उठी उषा की ज्वाल,
छोड़ कर नव समीर-निश्वास
कलरवों मिस गा गान सहास
जल गई नभ में तारक-माल ३५६

लपट ने कर स्वागत-सत्कार,
समर्पित किया उन्हें निज अङ्क
देव-वनिताएँ बनीं निशङ्क
कर रहीं अरुणोपवन-विहार ३६०

छा गई चारों ओर प्रशान्ति,
न सुन पड़ते थे कोई वचन
मौन थे नव अनलारुण वदन
मची थी लपटों ही में क्रान्ति ३६४

लपट का अति भीषण नर्तन,
हो रहा था सुन्दरियों साथ,
झुका कर लपटें चञ्चल माथ,
दिखाती थीं अनन्त यौवन ! ३६८

सूर्य ने पहिनाईं कर-माल,
सुमन की दीं मालिनि ने डाल
चिता ने करुणा-उर में लाल—
ज्वाल-मालाएँ भी दीं डाल ३७२

इस तरह समुद नाम ले 'नाथ'
धर्म की लज्जा रक्षण-हेतु,
करों में रख ज्वाला का केतु
नारियाँ गईं धूम के साथ ३७६

शोक से पूर्णरूप अभिभूत,
आज रह गई कहानी शेष,
भरे वह हृदयों में आवेश,
हृदय को करे पवित्रीभूत ! ३८०

चिता का जला हुआ कण शेष,
कहेगा मौन-भाव के साथ,
आर्य-ललनाओं की शुभ गाथ,
करेगा गौरव-गर्वित देश ३८४

उपसंहार

आ गया यवन बहादुरशाह,
राजपूतों ने होकर क्रुद्ध,
लोमहर्षण कर डाला युद्ध
अन्त तक ली न एक भी आह। ४

बहादुर की थी सैन्य अपार
बढ़ा था उसको रण-उन्माद,
आगई करती 'अकबर' नाद,
आर्य-दल गया शीघ्र ही हार ८

काम आया रण में प्रत्येक,
देश-गौरव का गर्वित आर्य,
हुई चित्तौर-भूमि कृत-कार्य,
हुआ भू का शोणित-अभिषेक १२

होगई जब यवनों की जीत,
ध्वंस हो चुका सभी रनिवास
हुमायूँ का दल आया पास,
जोश के गाता ऊँचे गीत १६

छिड़ गया फिर से भीषण रण
इधर बाबर-सुत आलीजाह,
उधर था यवन बहादुरशाह
लगे गिरने शोणित के कण २०

अन्त में हुई हुमायूँ-विजय,
बहादुरशाह गया था हार,
हार ही था उसका उपहार,
शीघ्र भागा गुजरात सभय २४

किन्तु क्या हुआ जीत का फल ?
हुमायूँ ने सुन जौहर गाथ
झुकाया बड़े शोक से माथ
हुई है विजय पूर्ण निष्फल ! २८

कहा उसने होकर निरुपाय,
"इलाही ! फ़तह न की हासिल
कौन है ऐसा जिन्दा-दिल
कह न उट्ठेगा जो अब हाय ! ३२

हाय ! गुलबदनों का क़ुर्बान,
कर रहा मेरे दिल को ख़ाक,
अरे, मैं कैसा हूँ नापाक,
क्यों न जाती है मेरी जान ३६

मिले मिट्टी में उम्र दराज़,
लग गई आने में क्यों देर,
कर दिया अगर उदू को ज़ेर,
किया हासिल क्या मैंने आज ?" ४०

वाम विधि का था यह उपहार
हुमायूँ रोया बारम्बार
हार बन कर झूले सुकुमार
हाय, चितौर-भूमि की हार !! ४४